स्मरण पृष्ठ

गुण-गीतिका

[स्वर्गीय श्रद्धेय मरुधरा-मंत्री स्वामीजी श्री हजारीमलजी महाराज की स्वर्गारोहण - तिथि चैत्र कृष्णा दशमी के शुभ - अवसर पर वितरित]

स्वर्गीय स्वामीजी श्री जोरावरमलजी म. के सुशिष्य

मिश्रीमलजी महाराज 'मधुकर'

•

प्रकाशक

:: रिखबदास प्रेमराज कांकरिया ::

मेवाडी बाजार, ब्यावर (राज०)

क्रम

जय-गुणगीतिका १

सबल-गुणगीतिका ५३

बुध-गुणगीतिका ६३

फकीरचंद्र-गुणगीतिका ७७

जोरावर-गुणगीतिका ८३

हजारी-गुणगीतिका ६६

मूल्य : श्रद्धा

संस्करण प्रथम, वि० संवत् २०१६, जय संवत् १६६

जो मुझे कहना है !

भारतवर्ष, ऋषि, मुनि, सत, तपस्वी, चिन्तक और विचारकों का देश है। यहा की मिट्टी के कण-कण से पवित्रता की सुगध आती है। जैनों की स्थानकवासी परम्परा मे पूज्य श्री जयमल्लजी महाराज आचार-निष्ठ महान् तेजस्वी आचार्य हुए हैं। उनके सन्त-जीवन के प्रति अनायास ही जन-मानस श्रद्धा से झुक झुक जाता है।

आचार्य श्री जयमल्लजी महाराज धर्म पथ के दीप स्तम्भ थे। आपके परवर्ती आचार्य और सत भी साधना पथ मे साधकों को प्रकाश देते रहे हैं। आचार्य श्रीजी व अन्य सतों के प्रकाशालोक में आज तक साधक-जन चलते चले आ रहे है। मैं चल रहा हूँ और मुझ जैसे अनेक पथिक भी साधना पथ पर अविराम अग्र पद हो रहे हैं।

प्रस्तुत 'गुण-गीतिका' पुस्तक मे उन्हीं आचार्य श्री जयमल्लजी म०, उनके चतुर्थ पट्ट धर आचार्य श्री सबलदासजी म० व उनके अनुयायी सत, परम श्रद्धेय स्वामीजी श्री बुधमलजी म०, श्री फकीरचदजी म०, श्री जोरावरमलजी म० व श्री हजारीमल्लजी म० की गुण-गाथा गाई गई है।

परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव मरुधरा-मंत्री स्वामीजी श्री हजारीमल्लजी महाराज का स्वर्गवास गत वर्ष नोखा मे हुआ था। चैत्र कृष्णा दशमी और एकादशी को ब्यावर का 'वर्द्धमान स्थानकवासी श्रावक सघ' उनका द्वि-दिवसीय 'स्मृति दिवस

मना रहा है । इस शुभ अवसर का लाभ उठाने की भावना रखने वाले स्वर्गीय पूज्य गुरुदेव के अनन्य भक्त धर्म-प्रेमी भाई रिखबदासजी व उनके अनुज भ्राता प्रेमराजजी कांकरिया की बलवती प्रेरणा पर 'गुण-गीतिका' के नाम से कागज की शान पर चढ़ाने योग्य मैंने यह सामग्री तैयार की है। यह है 'गुण-गीतिका' की कहानी।

जिन-जिन कवियों की कविता-पुस्तकों मे इन गीतों और कविताओं का संकलन किया गया है, उन उन कवियों का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

पाठक दिव्य पुरुषों के गुणों को स्मरण करके अपने जीवन की कमी को नापेंगे तो उन्नति पथ पर पावन प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे।

जैन स्थानक, ब्यावर
सं० २०१६ चैत्र कृष्णा १० } —मधुकर मुनि

आत्म प्रेरणा !

प्रात स्मरणीय पूज्य गुरुदेव मरुधरा मंत्री १००८ श्री हजारीमलजी महाराज का 'स्मृति दिवस' ब्यावर, जैन संघ समारोह पूर्वक मना रहा है, यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। दिव-गत पवित्र आत्मा पूज्य गुरुदेव के चरणों में मेरा मन श्रद्धा से नत हो गया। आत्म-प्रेरणा हुई 'गुरुदेव तथा उनके पूर्व-वर्ती ज्योति-र्धर सभी सन्त पुरुषों को श्रद्धा अर्घ अर्पित कर गुरु ऋण से कुछ अंशों में तो उऋण हो लू।' मेरी इसी भावना का परिणाम ही यह गुण-गीतिका पुस्तक है।

मैंने परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री ब्रजलालजी महाराज के समक्ष अपने भाव व्यक्त किए। उन्होंने अपने अनुज गुरु-भ्राता मुनिश्री मधुकरजी म को आज्ञा प्रदान की और उन्होंने इस गीतिका का सम्पादन किया। अत मैं मुनिश्री का हृदय से आभारी हूँ।

गुरुदेव के परम पावन इस 'स्मृति दिवस' समारोह पर 'गुण-गीतिका' को पाठकों के कर-कमलों तक पहुँचा कर मैं अपने को धन्य भाग्य मानता हूँ।

ब्यावर
चैत्र कृष्णा दशमी
वि० सं० २०१६

आपका
—प्रेमराज काकरिया

:: विचार विहंगम ::

★

विश्व - शान्ति अनेकांत पथ,
सर्वोदय का प्रति-पल गान।
मैत्री करुणा सब जीवों पर,
विश्व धर्म जग ज्योति महान्।

× × ×

प्रगति राष्ट्र के जीवन तरु की,
है उद्योग प्रगति पर निर्भर।
किन्तु वही उद्योग हितंकर,
जिसमें बहे अहिंसा निर्भर।

× × ×

भूमंडल पर तीन रत्न हैं,
जल अन्न सुभाषित वाणी!
पत्थर के टुकड़ों मे करते,
रत्न - कल्पना पामर प्राणी।

× × ×

अनेकांत की दृष्टि जहां है,
और न पक्षपात का जाल।
मैत्री करुणा सब जीवों पर,
जैन धर्म है वह सु-विशाल।

—उपाध्याय अमर मुनि

गुण-गीतिका

*

मंगल-कामना

श्रीमान् पूज्य जय स्तथा गणिवरः
श्री रायचद्रो मुनि
भव्यः सयति - आसकर्ण मुनिप
स्वामी तथा श्री बुधः
विद्वच्चन्द्र - फकीरचंद्र सुमुनि–
'जोरावरः' सद्गुरु ।
एते षड् मुनि - पुङ्गवा प्रतिदिनं
कुर्वन्तु वो मगलम्

श्रद्धास्पद सदा शान्त. जैन - धर्म - धुरधर ।
श्री 'हजारी' - मुनि र्लोके कुर्यान्नित्य सुमङ्गलम् ॥

—मधुकर मुनि

आचार्य-वर
श्री जयमल्लजी
महाराज

जन्म— वि० सं० १७६५ भादवा सुद १३, लांबियां

दीक्षा— „ „ १७८७ मिगसर वद २, मेड़ता

स्वर्गवास— „ „ १८५३ वैशाख सुद १४, नागौर

रिपुषु मार - ममत्व - मदादिषु,
जयमवाप्य निजं जय-नामकम् ।
प्रकटितं कृतमत्र हि येन स
जयतु पूज्य-वरो भुवने जयः ॥

श्रद्धांजलि

तपोनिधि ! सयम शुचिता सार !

१—तेरी अमर कीर्ति से पावन है सारा ससार।
मरु-वसुधरा का सुर-तरु तू वाञ्छित फल दातार ॥
तपोनिधि ! सयम शुचिता सार !

२—निष्कषाय, निर्लेप निरजन, निर्भय विगतविकार।
निद्रा-जयी नीति के नीरधि नियम-निष्ठ अनगार ॥
तपोनिधि ! सयम शुचिता सार ॥

३—मोह-मल्ल के प्रबल विजेता, ज्ञान ध्यान आगार।
श्री जयमल्ल ! शल्य दल मेरे, समता पारावार ॥
तपोनिधि ! सयम शुचिता सार ॥

४—मम मन-मानस-हस ! करो तुम मन मे नित्य विहार।
हो विवेक-विज्ञान हृदय मे पाऊँ शान्ति अपार ॥
तपोनिधि ! सयम शुचिता सार ॥

ब्यावर :

पं० शोभाचंद्रजी भारिल्ल

– दोहा –

१—अरिहंत सिद्धने साधु गुरू, प्रणमूं वारंवार ।
गुण कहिशुं श्री पूज्यना, ते सुणजो अधिकार ॥
२—पूज्य भूधरजी दीपता, बैरागी भरपूर
ज्यां पुरुषांरा पाटवी, जयमलजी जगसूर ॥

:: १ ::

[राग अलवेल्या]

१—जंबूद्वीपरा भरतमें रे लाल ।
लांबिया गाम श्रीकार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
महता मोहनदास जीरे लाल ।
महिमादे घरनार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
॥ जिन मारग कियो दीपतो रे लाल ॥ टेर ॥
२—पूरे मासे जनमियांरे लाल ।
कीधो हर्ष अपार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
बालक वय भणिया घणारे लाल
पिता परणाई एक नार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
३—मेड़ता नगर पधारिया रे लाल ।
करवा वाणिज्य व्यापार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
सौदागर भूधरजी मिल्यारे लाल
वाणी सुणाई अमृत धार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
४—सुणने प्रफुल्लित होगया रे लाल
बोल्या है सभा मंझार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
शील वरत मुझ दीजिये रे लाल
म्हारे लेणो संयम भार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
५—बात सुणीने आया कुटुम्बियारे लाल
ले आया साथ नार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥

दीधा परीषह भात भातरा रे लाल
पिण चलिया नहिं लगार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
६—मोटे मडाण शहर मेडते रे लाल
दीक्षा लीधी भूधरजी ने भेट ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
वडी दीक्षा दिन सातमे रे लाल
वड वीखरणिया हेट ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
७—विनय करी गुरुदेव नी रे लाल,
सूत्र किया मुख सात ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
गुरु आज्ञा फुरमावता रे लाल,
जोड खडा रह्या हाथ ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
८—राते आप पोढ्या नहीं रे लाल,
कीव एकान्तर उपवास ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
सोलह वरस लग सामठा रे लाल,
रह्या गुरुजी के पास ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
९—वाणी सिह धडुकिया रे लाल,
मिले परिषदा रा थाट ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
गाव नगर जहा पधारे रे लाल,
मेलो मण्डे गह घाट ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
१०—लाडू पेडा ने खाजी सूखडी रे लाल,
ते तो कदे भूल जाय ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
आपरी वाणी जिण साभळी रे लाल,
नहीं भूले उमर माय ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
११—फूल गुलाब ने मालती रे लाल,
अन्तर कस्तूरी री वास ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
तिणरी सुगध थोडी दूर मे रे लाल,
आपरी सैकडा कोसा वास ॥ श्री पूज्यजी हो ॥

१२—दीठां तो भूले नहीं रे लाल,
पिण सुणिया गुण थांरा कान ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
इवां पुरुषांरा दर्शन कद हुसीरे लाल,
ओहीज लग रह्यो ध्यान ॥ श्री पूज्यजी हो ॥

१३—उद्योत कियो जिन धर्म रो रे लाल,
किया साधु साधवियांरा थाट ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
परिषदा केरा वृन्द में रे लाल,
आप शोभो विराज्या पाट ॥ श्री पूज्यजी हो ॥

१४—वाणी विविध प्रकारनी रे लाल,
आप रे मुखरी सोड़ ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
फेली देश दिशावरां रे लाल,
आपरी कण्ठ कला में जोड़ ॥ श्री पूज्यजी हो ॥

१५—साज दिया तपस्यां तणा रे लाल,
घणा कराया संथार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
दातारगी कीधी घणी रे लाल,
आप भद्रिक पेले पार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥

१६—स्वमत ने अन्य मत में रे लाल,
चावा ठामो ठाम ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
प्रभु पास तणी परे रे लाल,
आपरो जसकारी घणो नाम ॥ श्री पूज्यजी हो ॥

१७—पाटवी 'श्रीरायचन्दजी' रे लाल,
साक्षात पूज्य अवतार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
ज्ञानी ध्यानी गिरवा घणारे लाल,
नहीं कोई बुद्ध रो पार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥

१८—सुस्वर कंठ स्वरूपता रे लाल,
वाणी दूधां धार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥

मगन हुआ घणा प्राणिया रे लाल,
धन धन करे नरनार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
१६—सवत अठारे इक्कावने रे लाल,
शहर नागौर रे माय ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
चारू सघ वृन्द मे रे लाल,
दीधी पीछेवडी ओढाय ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
२०—कीयो उपगार जिन धर्म नो रे लाल,
चारू सघरी साल सभाल ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
म्हारो पाट थाने दियो रे लाल,
धर्म दिपायजो चिरकाल ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
२१—पेली ढाल में एतलो रे लाल,
चाल्यो छे विस्तार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥
दूजी ढाल श्री पूज्य नी रे लाल,
चित्त दे सुणजो नरनार ॥ श्री पूज्यजी हो ॥

२

[राग—पेले पावडिये हो सुमण दे राणी पग दियो]

१—पूज्य 'जयमल्लजी' हो चारा चारू खूट मे,
कीधो धर्म उद्योत ।
घणा जीवाने हो तार्या दे दे देशना,
वधारी समकित ज्योत ॥ पूज्य० ॥
२—सवत सो सतरे हो वर्ष सतिसिये,
मिगसर वद बीज थाय ।
शहर मेडते हो आप दीक्षा आदरी,
भेट्या भूधरजीना पाय ॥ पूज्य० ॥
३—उमर वर्ष बावीसे हो तरुण पणे,
त्रिया, तजी सदर निकली लार ।

बावन वर्ष लग हो सिंह ज्यूं विचरिया;
जोर किियो उपकार ॥ पूज्य० ॥

४—जोधपुर जयपुर हो दिल्लीगढ़
आगरे चूरू फत्तेपुर बीकानेर।
मारवाड मेवाड हो किशनगढ़
साहपुरो भेरी बजाई फेर ॥ पूज्य० ॥

५—संवत अठारे हो वरस चालीस में,
शहर नागौर रे मांय।
पूज्यजी पधारिया हो बाई भाई हर्षिया,
आज भलो दिन थाय ॥ पूज्य० ॥

६—शहर नागोर में हो महिमा जिन धर्मनी,
श्रावक तिहां सुविनीत।
सेवा भक्ति करे हो बाई भाई पूज्यनी,
दिन दिन चढ़ते चित ॥ पूज्य० ॥

७—शहर जोधाण रा हो कागद मोकले,
धर अधिको प्रेम।
रतन चिन्तामणि हो सरीखा पूज्यना,
श्रावक जाणे दे केम ॥ पूज्य० ॥

८—स्वामी 'रायचन्द'जी हो सरीखा चौमासो करे,
भायां बायांने कोड।
'घासीराम'जी सरीखा हो सेवा करे,
वंदगी वतलाया हाथ जोड़ ॥ पूज्य० ॥

९—संवत अठारे हो वर्ष बावना यहे,
शुद्ध पख फागुण जान।
दशमरे दिन हो कारण डील में उपजो,
बोल्या सिंह समान ॥ पूज्य० ॥

१०—सथारो मैं करस्या हो श्रावक सेणा साभलो,
काढी छे मुख वाय ।
श्रावक कागद हो बीकानेर मोकले,
स्वामीजी ने वेग बुलाय ॥ पूज्य० ॥

११—कागद वाच्या हो स्वामी 'रायचन्दजी,'
कीनो तुरत विहार ।
नागौर पधारिया हो चरण पूज्यरा भेटिया,
पूज्य हर्ष्या तिणवार ॥ पूज्य० ॥

१२—तपस्या मांडी हो सलेखणा,
कीना एकान्तर इग्यार ।
एक वेला रो हो कियो पूज्यजी पारणो,
विगय सगा परिहार ॥ पूज्य० ॥

१३—दूजे वेलारो हो कीजे पूज्यजी पारणो,
कह्यो नै तो कियो रे सथार ।
हरगिज आहार हो लीनो री वाञ्छो नहीं,
चढियो परिणाम पैलै पार ॥ पूज्य० ॥

१४—स्वामी 'रायचन्दजी' हो कहे पूज्यजी कीजे पारणो,
श्रावक कहे जोडी हाथ ।
राजवैद्य पीथी हो पूज्यजी सु विनती,
पिण सुणी एकज बात ॥ पूज्य० ॥

१५—सवत अटारे हो वर्ष तेपने,
चैत्र पूनम शुक्रवार ।
शहर नागौर मे हो चारु सघरा वृन्द में,
कियो जाव जीव सथार ॥ पूज्य० ॥

१६—नगर ना लोक हो टोला सचरे,
दर्शन पूज्यजी सु राग ।

सुव्रत महिमा हो हुई जिन धर्मनी,
दर्शन पूज्यजी सु' राग ॥ पूज्य ॥

१७—भेरी वजावे हो स्वामी 'रायचन्दजी',
आवे राजरा दीवान ।
नर नारी हो मेलो जोर मंड रह्यो,
इन्द्रपुरी सम जान ॥ पूज्य० ॥

१८—साधु साध्वी हो कोई एकान्तर करे,
लागा धर्म रा थाट ।
गांव गांव रा हो श्रावक आवे दर्शन कारणे,
दीपायो 'भूघरजी' नो पाट ॥ पूज्य० ॥

१९—'गजो' जी पधारिया हो स्वामी पेला,
गुजरात सु' आया 'तुलसीदास' ।
साधु साध्वीयां रो हो मेलो मंड रयो,
ठाणे गुण पचास ॥ पूज्य० ॥

२०—जोधाणा रा भाया हो आया वेग,
सताव सु' वंदे वे कर जोड़ ।
गुरांजी साहबरा हो चरण आज भेटिया,
पूरा मन रा कोड ॥ पूज्य० ॥

२१—सुख मांही पोढ्या हो सूरत जाणे देवनी,
हाथे सिमरणी सोय ।
हस्त मुखी मुद्रा हो शोभे सूरत आपरी,
सरबा कांनज होय ॥ पूज्य० ॥

२२—चोथे आरे में हो तीर्थंकर आगे हुआ,
हिवडा पांचमें काल ।
धर्म दीपायो हो पाछ राखी नहीं,
थांने नमो-नमो तिहूँ काल ॥ पूज्य० ॥

२३—सवत अठारे वरस तेपना, मद्दे पाचम वद वैसाख ।
स्वामी 'रायचन्दजी' हो परसादे शहर नागौर मे,
रिसी आसकरणजी इम भाख ॥ पूज्य० ॥

—पूज्य श्री आसकरणजी महाराज

३

[राग]

१–पूज्यजी सथारो कियो दीपतो, जयमलजी जग प्रसिद्ध के।
शहर नागौर ठाणे विराजिया, तेरमे वरस नी विध के ॥पू०॥
२–उपवास ग्यारह एकान्तर किया, पाच विगय सू खडी त्याग के ।
चढता परिणाम पूज्यात्मा ज्यारे, वसियो मन वैराग के ॥पू०॥
३–प्रथम चेले को पारणो दूजो बेलो कियो कृपानाथ के।
मैं मन कर पारणो ना करा, सो वाता एक वात के ॥पू०॥
४–तीन पहर ताई अरजी करी, आप पारणो करो इकवार के ।
मैं तीन आहार त्याग दिया, मनसू मैं कियो सथार के ॥पू०॥
५–चैत्र सुदि पूनम चानणी, शुक्रवार सरवरे दिन के।
चार सघ मध्ये सथारो कियो, इन जगमें 'जयमलजी' धन के ॥पू०॥
६–ज्यारी क्षुधा वेदना उपशम गइ शरीर में सर्व वाता चैन के ।
लेश्या ध्यान इक धर्म को उजला परिणाम अनेक के ॥पू०॥
७–पूण्य योगे पूज्यजी पधारिया, नागौर नगीने शुभ ठाम के।
जठे श्रावक लोक सुखिया वसे, करे पूज्य तणा गुण गान के ॥पू०॥
८–श्रावक सेवा सरवरी करे, एक रगा हाथ जोड के।
पूज्य रो सथारो देख ने, पूरा मनरा कोड के ॥पू०॥
९–'घासीरामजी' गोडे रहे, साचो मन करे सेव के।
पूज्य रे मन गमता गुरु आगले, पूज्य ने अराधे नित मेव के ॥पू०॥
१०–वलि तेज घणो पूज्यजी तणो, ज्याने पण लीना रीझाय के ।
पूज्यजी कने घासीरामजी, घणी निरिया ले बतलाय के ॥पू०॥

११-धन्य पूण्याई घासीरास की, घासीरास का मोटा भाग के।
रात दिवस श्री पूज्यजी रे, चरणा, में रया लाग के ॥पू०॥
१२-पचास वरस लग पूज्यजी रात दिवस सोता नहीं कोय के।
पूठे दे बाजोट बैठा रह्या, जोग-मुद्रा जोय के ॥पू०॥
१३-जयपुर दिल्ली मेवाड़ में, गोड़वाड ने बीकानेर के।
फतेपुर जालोर में मारवाड में पग फेर के ॥पू०॥
१४-शहर गांव में विचरिया घणा, किया घणा उपकार के
चारूं संघरा नायका, ज्यांने जाणे जग संसार के ॥पू०॥
१५-दिल रा दातार हुआ घणा, विजयवन्त भद्रीक के।
जोडां घणी ज्यांरी जुगतरी, दर्शन महा मंगलीक के ॥पू०॥
१६-कायर रो कंपे कालजो, कोप्यो देखो काल के।
आप मरण सूं सामा मंडिया, काल सूं बांधी चाल के ॥पू०॥
१७-सूर पिण जीवरा जतन करे, आडी देवे ढाल के।
आप काया को संकल्प लड्यो, वैराग्य में हुआ लाल के ॥पू०॥
१८-संवर पेटी कमर कस ने, भली किरिया सबाही कवाण के।
बाहे वीर तपस्या तणां, करमां सासी वाया बाण के ॥पू०॥
१९-ज्ञान घोडे चढया चूंप सूं, दया डाल री लीनी ओट के।
क्षमा खड्ग कर ग्रही, दीधी काल रे खांधे में चोट के ॥पू०॥
२०-सत्य बरछी शीलरी शोभती, किया केसरिया श्रीपूज्य के।
मोक्ष कील्लो लेवा चढया कर्म वैरी जासी धूज के ॥पू०॥
२१-गजराजजी आया गुजरात से, पायां लाग्या जोडी हाथ के।
दूर थकी दर्शन ने आवियो, म्हारे आपरो ध्यान दिन रात के ॥पू०॥
२२-सुरतरामजी पिण आवियो,
भेलो हुओ साधु साध्वियां रो वृन्द के।
तारण तिरण श्री पूज्य जी,
धन्य मोहनदासजी रा नन्द के ॥पू०॥

२३-तुलसीदासजी तत साजियो, बगतमलजी ज्यारे साथ के।
पाय लागा श्री पूज्य के,
पूज्य माथा उपर फेरियो हाथ के ॥पू०॥
२४-पैंसठ वरस चरित्र पालियो यश कीर्ति ज्यारों नाम के।
सर्व सतियासी वर्ष रो आउखो,
ज्यारों जनम लाबिया गाम के ॥पू०॥
२५-नरसिंह चतुर्दशी दिने वैसाख शुद्ध शुक्रवार के।
दृढ परिणामे दृढ आतमा,
सथारो सात पहर चउविहार के ॥पू०॥
२६-सोले साधा सेवा करी, ज्याने सथारो आयो इक मास के।
दिन अढाइ दोपहर ढलिया पछे,
कियो स्वर्ग पुरी में वास के ॥पू०॥
२७-सवत अठारे तेपने सुदि वैशाख मास मझार के।
गुण-माला गूथी ज्ञानरी शिष्य,
पूज्य रायचन्दजी हितकार के ॥पू०॥
२८-शहर नागौर ज दीपतो जठे जुगतसु कीनी जोड के।
सुणता स्वाद लागे घणी, कहता सुणता उपजे कोड के ॥पू०॥

राग —गोपीचन्दरी

१—सथारो इक मासरो आयो उपर वले इक दिन ए।
सात पहर चऊ विहार आयो पूज्य जयमल्लजी धन्न ए॥
२—नरसिंह चतुर्दशी चानणी दो पहर ढलता जाण ए।
सौभाग्य रूडो फलावारी पूज्य तणो निर्वाण ए॥
३—स्य भव ने अन्त [illegible] माही महिमा पेले पार ए।
जयमल[illegible] [illegible]यो, धन २ कहे नर नार ए॥

४—सतियासिये दीक्षा ग्रही ने तेपने संथार ए।
पेंसठ वरस लग जोग पाल्यो घणी वजाइ वहार ए ॥
५—'धर्मदास' 'धन्नो' धन्य बूधरजी चौथा 'जयमल्लजी' सोय ए।
साल रो रूंख साल परिवार,
ज्यांरी करणी में कसिय न कोय ए ॥
—पूज्य श्री रायचंदजी महाराज

:: ४ ::

[छन्द-मोतीदाम]

१--अहोपुर है अतिशै अहिपुर,
जहाँ जिन धर्मसुकीर्ति जरूर ।
पधारिय पूज्य जयेश प्रवीण,
जिणांरि सुवाणि ज्यूं बाजत बीण ॥
२—अती हरषै सब अंग हि अंग,
रंगे जिन धर्म में सुदृढ़ रंग।
भलो उदयो उण वासर भाण,
पधारिय आज सुपुण्य प्रमाण ॥
३—करे बहु प्रीति, धरी मन कोड,
रहे सब ही नित वे कर जोड़ ।
श्रद्धा सहँठी जुं वडे सुविनीत,
पुण्याइ भली जसु पूरी प्रतीत ॥
४—गुणी गिरुआ वसि हे गुरु गोड,
सके किम संगत ऐसुं कि सोड।
विराजत पूज्य सिंघासन पाट,
थयेवर पार्षद अत्तहि थाट ॥

५—विधी विध दाखत आगम वाण,
सखायत मा नु अमीय समान ।
हियो हुलसे हरषे मनुहीर,
सुहावत पीवत गंग सु नीर ॥
६—भली विध भावत दान नि भाव,
पडे जनता पर खूब प्रभाव ।
चहे नित पूज पदाम्बुज चित्त,
अहो जगमे इनके न अमीत्त ॥
७—दिये जन आप अदल्लक दान,
मगन्न हुवे मन दे सन मान ।
अती रखता सब ही उपयोग,
लहे धर्म लाह सभी भवि लोग ॥
८—कबों नहिं व्यापत अतर क्रोध,
जित्यो तुम काम महानलि जोध ।
मथ्यो तुम मान महा बलवान,
भजो भल आप सदा भगवान ॥
९—लहे किम लोभ तनो कुछ लेश,
विख्यात हि नाम सुदेश निदेश ।
दिये बहु आगम होय दतार,
सिरे चउसघ तनी करो सार ॥
१०—तुले कुण कठ तणो तुम तोल,
वदो बहु मीठ हि मीठ सु बोल ।
रहो निशि ओठ लई तुम रात,
मटीक किया मुख सूत्तर सात ॥
११—दिवी तुम बहोत मुनिन्पन दीख,
सिरे पूनि दीनि सुशास्त्रिय सीख ।

संथार सुं आप दिया बहु साज,
जनो जन मानत धर्म जहाज ॥
१२—कदे न सुहास्य केहनि कत्थ,
वडो वरसावत रस्य सुवत्त ।
मनोमन भावन मौखिक मोड़,
जगो जग फैली तुम्हारी हे जोड़ ॥
१३—करे पटदर्शनि ऐसेहि कहेन,
झगामग कीध तुम्ही धर्मजैन ।
सुधेमन कीध गुरुजन सेव,
सराहिय आपकुं वे स्वयमेव ॥
१४—हृदे गुरुभायाँ सुं राखियो हेत,
सुशीष्य मिल्या तुमने शुभचेत ।
पटोधर है मुनि 'राय' प्रवीण,
जिनागम ज्ञायक तत्त्व सुझीण ॥
१५—सही सिखण्यां सव पालत सीख,
उपासक श्रावक मानु है ईख ।
सराविका है सव स्हेणि ही सोय,
करे तपस्या नहीं चूकीह कोय ॥
१६—उठे तुमरे मन श्रेष्ठ उम्मेद,
खरे तुम नामे मिटे सव खेद ।
वसे वर्ष बारह यहां थिर वास,
अतीमुद पूगि सरावग आस ॥
१७—उठ्यो अव कारण बावन आय,
वदे पूज केसरि सींह जूं वाय ।
अवे इत आगयो अवसर एह,
सके निभ केम जुदेह सनेह ॥

१८—सलेपण कीधि सरीर ने सोष,
जुम्मार दिया इ्य फौज में झौंक।
सवाहिय तप्पतणी समसेर,
करी कटकी क्रम काटन केर ॥
१६—करे दृढ हैं पचखान कनान,
परा पुज धूजा दिया जम प्राण।
विहे इह काल वडो भट वीर,
तके मनु मारत सींह जू तीर ॥
२०—सवे विनवे मुनि सघ सहाय,
रत्यो किम केसरि सींह रहाय।
समोसु अठारइ तेपन सार,
सुदी पख चैत मिले सघ चार ॥
२१—सूरापणे आप कियो है सथार,
निके वन धन्न करे नरनार।
वडे उपकारि मिले नर वृन्द,
करे तह त्याग तजे मुलकन्द ॥
२२—तिथी सत्र पाच लिलोति कुत्याग,
वडे व्रत धारत यून्त वैराग।
छटक्क किये निशि भोजन छोड,
करे उपवास वेला युत कोड ॥
२३—मिठाइ थी खेंच लियो कड़ मन्न,
धरे धर्मयान किये वन धन्न।
मडे वहु पाछलि रातयि मेळ,
चऊ वरणा मे लगी इ्य-च्हेल ॥
२४—छजे सहु लोक में पूण छत्तीन,
सवे जन नाँवत साधु कुसीस।

धरे अति कोड आवे नर धीर,
भली विध इंद्रपुरी जिसी भीर ॥
२५—गुणीजन आवत आपरे मोड,
जोधाणि रा भाई बंदे कर जोड़ ।
त्याग विराग करे बहु तेह,
दीठे तुम सुखे हुवे शुद्ध देह ॥
२६—शहेर में होवत व्होत सराह,
चिते जन राखत आपकि चाह ।
मगन्न हुवे लखि मानव मन्न,
धरा महि पूज्य सिरी 'जय' धन्न ॥
२७—वदे 'रायचंन्दजी' स्वामि बखाण,
'संथार पईरणाय' सूर सुजाण ।
वधे नित पार्षद लोकन वृन्द,
धरे धर्मराग आवे तजि धंद ॥
२८—सामायिक पौषध आदिक सौह,
लग्यो धर्मध्यान क्रिया तणो लोह ।
करे तँह श्रावक ऊच्छव कोड,
हिये गुरुभक्ति की लागी है होड ॥
२९—करे तप साध्वि इकंतर केइ,
लखी जन लाभ धरम्म को लेइ ।
देखे जाणो पोढि है मूरति देव,
सदा जाणे कीजिये इणारी सेव ॥
३०—डिगे नहिं जाणे पड़ी रुंखडाल,
कर्यो मनु पूजजी चोथो हि काल ।
ढुके यक नांहि दिखात टसक्क,
झिलोझिल फैल्यो है जग्ग जसक्क ॥

३१—अगे धनशालि थया अणगार,
वडी इणकाल वजाइय व्हार।
सदा करे सेव रहवार से शाम,
ऋषीश्वर राजत 'घासीयराम'॥

३२—दरसण आवत राज दिवान,
जयप्पुर जोधाणा बीकाणा जाण।
अनम्मि हता तिके नम्मिया आण,
रटे मुख आपको नाम म्हसाण॥

३३—मग्न हुवे लखि राज मुसाव,
फुलि फुलवारि जिसा रह्या फाव।
पुछावत साता मद्रा पृथिपाल,
दिये मुख मुल्कत जाव दयाल॥

३४—वहूतित श्राविका कर रही वद,
नीका पुज मोहनजी तणा नद।
मरानक देखन पालत सुख्ख,
सदा रही उभा लखे सन्मुक्ख॥

३५—मास इक सथारो थायो मगन्न,
लोक मे लागी है धर्म लगन्न।
चादनि वैशाखि तिथि चोदस्स,
जोर निर्वाण फेल्यो घणो जस्स॥

३६—सथार चोविहार पोहर सात,
जगो किरत्ती मुख वर्णि न जात।
अठे गुण आपमे पूज्य अपार,
नमो नमो आपने नम्मसकार॥

३७—सवत अठारह तेपन सोय,
छपे वद दशम वैशाखि होय।

सुक्खदायक नित्य नागोर शहेर,
लिखी पुज सद्‌गुण गावण लहेर ॥
३८—पुज्य 'रायचंदजी' तपे परसाद,
वर सम्यक्त्व प्राप्त मिटयो विषवाद ।
करे इम अर्ज रिषि 'आसकर्ण',
सदा हुय जो गुरुदेव रो शर्ण ॥

—स्वर्गीय पूज्य श्री आसकरणजी महाराज

:: ५ ::

❀ रागः—गजरे की ❀

१—गावो गावो री पूज्य जयमलजी ना गुण गावो,
सुख पाओरी-घर बैठां होय बधावो ॥गावो०॥
२—श्री-संघ नो काज करावो,
और सत्रु की भीड़ मिटावो ॥गावो०॥
३—दुश्मन अलग भगावो,
वली आदर देवे नर-रावो ॥गावो०॥
४—झगड़े जीत रखावो,
कोईय न करे जग दावो ॥गावो०॥
५—पुत्र कलत्र मित्र मिलावो,
भूत-प्रेत ने दूर नसावो ॥गावो०॥
६—अड़यो काम न रक्खावो,
वली बिगड़यो काम बणावो ॥गावो०॥
७—प्रत्यक्ष परचो दिखावो,
वली भूलों राह बतावो ॥गावो०॥

८—मुनि 'राम' करे छे जतावो,
म्हें तो देख्यो प्रगट प्रभावो ।।गाजो०।।

६

❀ राग —नाम जपो श्री नाकोडो ❀

१—पूज्य जयमल्लजी हुवा अवतारी,
ज्यारा नाम-तणी महिमा भारी ।
कष्ट टले मिटे ताव तपो,
पूज्य जयमल्लजी रो जाप जपो ।।

२—पूज्य नामे सब कष्ट टले,
वली भूत-प्रेत पिण नाही छले ।
मिले न चोर हुवे गप्प-चुपो,
पूज्य जयमल्लजी रो जाप जपो ।।

३—लक्ष्मी दिन दिन बढ जावे,
वली दुख नेडो तो नहीं आवे ।
व्यापार मे होवे बहुत नफो,
पूज्य जयमल्लजी रो जाप जपो ।।

४—अडयो काम तो हुय जावे,
वले विगडयो काम तो वण जावे ।
भूल-चूक नहीं खाय डफो,
पूज्य जयमल्लजी रो जाप जपो ।।

५—राज-काज मे तेज रहे,
वली खमा-खमा सहू लोग कहे ।

आछी जायगा जाय रुपो,
पूज्य जयमल्लजी रो जाप जपो ॥

६—पूज्य-तणो जो लियो ओठो,
ज्यांरे कदे नहीं आवे तोटो ।
घर-घर-बारणे कांई तपो,
पूज्य जयमल्लजी रो जाप जपो ॥

७—एक माला नित नेम रखो,
किण बात तणो नहीं होय धक्को ।
खाली त्रिमाण ओर टलेजी सप्पो,
पूज्य जयमल्लजी रो जाप जपो ॥

८—स्व-भक्त-तणी प्रति-पाल करे,
मुनि 'राम' सदा तुम-ध्यान धरे ।
कोई प्रत्यक्ष बात सती उथपो,
पूज्य जयमल्लजी रो जाप जपो ॥

९—पूज्य-नाम-प्रताप इसो जबरो,
दुःख कष्ट रोग जावे सगरो ।
केई भवाँ रा कर्म खपो,
पूज्य जयमल्लजी रो जाप जपो ॥

—स्वर्गीय स्वामीजी श्री रामचन्द्रजी महाराज

७

❀ राग—पदम प्रभ पावन नाम तिहारो ❀

पूज्य तेरो नाम प्रभाविक भारी
तेरी महिमा कहिये कहारी ॥ टेर ॥

१—'बुद्धर' पूज्य तणी सुण वाणी,
जाण्यो ससार ने खारी ।
प्रथम अवस्था मे सयम लीधो,
त्यागी नव परिणीता नारी ॥पूज्य०॥

२—चारित्र ले गुरु विनय करी ने,
भणिया आगम सारी ।
एक पहर मे पाच सूत्र को,
लिया दिया मे धारी ॥पूज्य०॥

३—षोडश वर्ष इन्तर कीने,
विच नहीं अंतर पाडी ।
वर्ष पचास शयन नहीं कीनो,
आ तुमची अधिकारी ॥पूज्य०॥

४—पूरण मास तणो सथारो,
आराध्यो सुखकारी ।
सावन मास नी शुक्ल चतुर्दशी,
अमर हुआ अवतारी ॥पूज्य०॥

५—भाव सहित तुम नाम ने ध्याता
देवो के आरत टारी ।
सुख सपत मन वंछित पावे,
आ तुम नाम प्रभारी ॥पूज्य०॥

६—जग जयवंत नाम तुम राजे,
जयमलजी जयकारी ।
'भानीराम' रा भय सब मेटो,
बार बार बलिहारी ॥पूज्य०॥

—स्वर्गीय स्वामीजी श्री भानीरामजी महाराज

:: ८ ::

❀ राग:—नाथ कैसे गज को फंद छुडायो ❀

पूज्य-वर जयमल्लजी जय-कारी,
ज्यांरी महिमा है अति-भारी ॥ पूज्य० ॥

१—गांव 'लांबियां' जनम भयो है,
पूज्य-तणो सुख-कारी ।
महता 'मोहनदासजी' केरा,
पुत्र हुवा जस-धारी ॥ पूज्य० ॥

२—माता 'महिमा' के उदर उपना,
आनन्द - मंगल - कारी ।
जोबन-वय में संजम लीनो,
त्यागी परणी नारी ॥ पूज्य० ॥

३—गुरुवार 'भूधर' आप भेटिया,
ज्ञानी ने गुण-धारी ।
सतरे सो सतियासी वरसे,
आप भया व्रत-धारी ॥ पूज्य० ॥

४—पांच महाव्रत धारण कीना,
पूज्य हुवा अविकारी ।
सतरा भेदे संयम पाली,
मारी है ममता सारी ॥ पूज्य० ॥

५—सोले वरस एकातर करने,
त्याग बतायो है भारी।
शशी-सम शीतल मधु सम मीठा
पूज्य महा - उपकारी ॥ पूज्य० ॥

६—वरस पचास लग शयन न कीना,
आलस्य दूर निवारी।
समता और वैराग्य वढायो,
वार - वार वलीहारी ॥ पूज्य० ॥

७—सम्वत अठारे तेपने वर्षे,
मास सथारो धारी।
वैशाख मास की सुद चवदस को,
पहुँच्या है स्वर्ग-मझारी ॥ पूज्य० ॥

८—पूज्य-तणा गुण सब जन गावो,
मिलकर वार 'हजारी'
'मिसरी' मुनि की यही अरज है,
मुझको देवो तारी ॥ पूज्य० ॥

६

❀ राग—जय जगदीश हरे ❀

जय जयमल्ल गणी
ओं जय जयमल्ल गणी
पावन परम प्रभा-मय
जय जय पूज्य-मणी ॥

१—'मोहनदास' सुतात आपके,
'महिमा' मात भली—स्वामी-महिमा०

समता के सरताज आपके
बरती रंग - रली ॥ जय० ॥

२—जोवन वय में संजम लेकर,
कैसो काम कियो— स्वामी-कैसो०
तज कर सुंदर नवला नारी,
जवरो जोग लियो ॥ जय० ॥

३—'भूधर' गुरु के शिष्य आप थे,
जग में जस - धारी—स्वामी-जग में०
जीवन सफल बनाया तुमने,
जन - मन - प्रिय - कारी ॥ जय० ॥

४—संवत सतरे सौ सतियासी,
मिगसर मास भलो—स्वामी-मिगसर०
वदी दूज दिन दीक्षा धारी,
करियो काज भलो ॥ जय० ॥

५—संवत अठारे सौ तेपन,
'नरसिंह' दिन आया—स्वामी-नरसिंह०
स्थूल-देह का त्याग किया था,
अमरासन पाया ॥ जय० ॥

६—सोलह वरस एकांतर करके,
कितना त्याग किया—स्वामी-कितना०
वर्ष पचास न शयन किया था,
आलस दूर किया ॥ जय० ॥

७—जनम 'कांठियां' धार 'मेड़ते'
शुभ दीक्षा धारी— स्वामी-शुभ०
नगर 'नगीने' स्वर्ग सिधाये,
वार वार वलिहारी ॥ जय० ॥

८—महा-महिम ! मुनिराज ! महोदय !
तव चरण-कमल के— स्वामी-तव०
'मधुकर' हैं हम नर-नारी सब
ग्राहक शिव-सुख के ॥ जय० ॥

६—हाथ जोडकर अर्ज करें, हम
संकट सर्व हरो— स्वामी-संकट०
विश्व-प्रेम के भाव हमें दो,
नैया पार करो ॥ जय० ॥

१०

❀ राग —तुमको लाखों प्रणाम ❀

पूज्य-प्रवर जयमल्लजी—
तुमको लाखों प्रणाम ॥

१—महता 'मोहन' तात तुम्हारे,
माता - 'महिमा' -कुल-उजियारे
जग के दिव्य सितारे—
तुमको लाखों प्रणाम ॥

२—नव-परिणीता 'लक्ष्मी' तज कर,
भरी जवानी संयम लेकर,
भेंटे गुरुवर 'भूधर'—
तुमको लाखों प्रणाम ॥

३—सोलह वर्ष तक एकांतर,
किया आपने तप निर्मलतर,
धन धन हे योगीश्वर—
तुमको लाखों प्रणाम ॥

४—तुम तो वर्ष पचास न लेटे,
निद्रा लीनी बैठे बैठे,
कितने थे तुम सैंठे—
तुमको लाखों प्रणाम ॥

५—जन्म 'तांबियां' 'मेड़ते' संयम,
स्वर्ग 'नगीने' पाकर प्रियतम
जीवन पाया उत्तम—
तुमको लाखों प्रणाम ॥

६—सीठे थे तुम परम तपस्वी,
योगी थे तुम परम यशस्वी,
ज्ञानी थे ओजस्वी—
तुमको लाखों प्रणाम ॥

७—नाम-जाप से पातक जावे,
रोग-शोक-भय सब मिट जावे,
शिव - सुख - संपत पावे—
तुमको लाखों प्रणाम ॥

८—मुनिवर 'मधुकर' यों गुण गावे,
तव चरणों में शीश नमावे,
जय जय ध्यान लगावें—
तुमको लाखों प्रणाम ॥

११

❀ राग —छुप-छुप आते हो ❀

जयमल जयमल जय गुण गाइये,
स्वर्गवास तिथि आज उनकी मनाइये जी उनकी०

१—समता सतत थी जिनके जीवन में,
वासना विमुख थी जिनके जीवन में-जी जिनके०
जीवन उन्हीं का अब आप अपनाइये ।।स्वर्ग०।।

२—त्याग के वैराग्य के विशद विचार के,
अनुपम गृह ये जो शुभ-सदाचार के-जी शुभ०
परम पावन अब वैसे बन जाइये ।।स्वर्ग०।।

३—धैर्य था अनूठा जिन में दृढ़ता विशद थी
साधना सजग जिनकी-भावना विमल थी-जी भावना०
उनकी सुयश-गाथा सबको सुनाइये ।।स्वर्ग०।।

४—भोगों में विरक्त थे जो योग अनुरक्त थे,
शक्ति से सपन्न थे जो सदा अनासक्त थे-जी सदा०
उनके चरण में शीष को नमाइये ।।स्वर्ग०।।

५—जय के सुखद तप तम-चरण-कमल के,
बनकर मधुकर' सब जन मिलके-जी सब जन०
उनकी सुगीति से गगन गुंजाइये ।।स्वर्ग०।।

—मधुकर मुनि

:: १२ ::

❀ रागः—जय जगदीश हरे ❀

जयमल पूज्य सरे,
जग-जयमल पूज्य सरे ।
परम पवित्र चरित्र तुम्हारा—
अघ सब अलग करे ॥ टेर ॥

१—पावन परम नाम जो तेरा—
शुद्ध मन से समरे—स्वामी शुद्ध०
वह नर आत्म-शान्ति को पाकर—
भव-जल तुरंत तरे ॥ जय० ॥

२—धन्य भाग्य मरूधर भूमिका—
जिसमें जन्म धरे—स्वामी जिसमें०
निर्भय होकर गुण-पूजा का—
सत्य प्रचार करे ॥ जय० ॥

३—हम भी कभी तुम्हारे जितने—
त्यागी बन विचरे—स्वामी त्यागी०
विश्व-मात्र में जैन धर्म के—
आस्तिक - भाव भरे ॥ जय० ॥

४—यही एक है विनय हमारी—
विश्व-प्रेम प्रसरे—स्वामी विश्व०
सर्व तुम्हारे मिल अनुयायी—
एक छत्र विहरे ॥ जय० ॥

५—स्वावलंबी निर्दम्भी तुम-सम—
दो, न किसे अखरे—स्वामी दो०

सब भावना सुफलित होकर—
सब विधि सिद्धि करे ॥ जय० ॥

· १३

❀ राग—मैं वन की चिड़िया ❀

मैं जयमल जयमल हरदम मुख से बोलू रे ॥ टेर ॥

१—यह भव-वन है भय-कारी,
है अघ-काटों की झारी ।
मैं नाहक उसमें अशुभ कर्म-वश—
गेंद-दडी ज्यों इधर उधर क्यों डोलू रे ॥मैं०॥

२—ससार-समदर खारा,
उसमें है एक सहारा ।
मैं जयमल के शुभ-नाम तरणि से—
इस भव-जलनिधि के बाहर होलु रे ॥मैं०॥

३—ज्ञानादि हुए सब मैले,
दुर्गुण उनपे है फैले ।
मैं जयमल जयमल-नाम-स्मरण जल—
से इन आत्म-गुणों को झटपट धोलू रे ॥मैं०॥

४—है आठ कर्म ये भारी
हलकी फिर आत्म हारी
मैं उनके ऊँचे जीवन से इस—
आत्मिक बल की तात्विक बातें बोलू रे ॥मैं०॥

५—है बद मुक्ति-दरवाजा,
जहा आत्मिक सुख है ताजा ।

वहां लगे हुए अठ कर्म ताले को,
नाम कुंची से झटपट झटपट खोलूं रे ।।मैं०।।
६—यों 'लाल' मुनि मन चाहे
आनंद में अति उमाहे ।
मैं आत्म-भूमि में क्रोधादिक सब,
साफ-साफ कर नाम-बीज को बोलूं रे ।।मैं०।।

:: १४ ::

❀ रागः—चुरा कर ले गया कोई ❀

बतादी बात कर तुमने,
जो दूजों से न होने की ।
तेरे जीवन को लिखने में
वर्णमाला हो सोने की ।।टेर०।।

१—वर्ष बाईसवें में जब, तुम्हारी होगई शादी ।
बने वैरागी व्रतधारी, तैयारी थी जो गौने की ।।बतादी।।

२—परिषह सहन करके, दिया उपदेश इस जग में ।
मिटाई खूब जोरों से, खराबी कौने-कौने की ।।बतादी।।

३—अटल प्रण से विचरते थे, वीर-संदेश देने को ।
नहीं तव मन-वचन में थी, तो भीति जादू-टोने की ।।बतादी।।

४—सदा तुम सावधानी से निजातम को बचाते थे ।
प्रवृत्ति चलती रहती थी, करम-मेले को धोने की ।।बतादी।।

५ - करे यों 'लाल' मुनि अर्जी, सुनो जयमल ! अये भगवन्
वर्ष पचास तक कैसे, नहीं की बात सोने की ।।बतादी।।

—श्रमण 'लाल'

१५

❀ राग —छोटे से बलमा ❀

भारत के भूषण मानो वीर हुए जयमल जमधारी ॥ टेर ॥

१-गाम फूला सू छायो 'लाम्बियो' मरुधर के माही ।
जन्म भूमि थी जयमल्ल की वह आनन्द-कारी ॥ भारत०॥

२-जाति 'समदडिया' न्यारी सोहनी थी जग में जहारी ।
पिता 'मोहनदास' मात थी 'महिमा' दे वारी ॥भारत०॥

३-चढियो त्रिरमची रग-वैराग्य नो मुनि ममता मारी ।
छोडी छ महिना परणी कामनी 'लाछादे' प्यारी ॥भारत०॥

४-सवत सतरे सो मिति मासिये, मुनि दीक्षा धारी ।
पूज्य 'भूधर' करी महर हुए भवियण हितकारी ॥भारत०॥

५-पडिकमणो धारियो मुनि पोहर में तीक्षण वुद्धि न्यारी ।
सेवाकारी है शुद्ध भाव सू वन आज्ञाकारी ॥भारत०॥

६-सोले वरस एकातरे की तपस्या भारी ।
मह्या परिपह मुनि आकरा आतम उजवारी ॥भारत०॥

७-राजा महाराजा केई गढपति चरणों में चित्त धरते ।
चाया है देश विदेश, जाणे दुनिया सारी ॥भारत०॥

८-नाम जपिया जयमल्ल नो, सकट टल जावे ।
वावे दिन दिन प्रेम, होवे सुवुद्धि थारी ॥भारत०॥

९-वर्ष पचासा लग पूज्यजी शयन न कीनो ।
कीधो है पर-उपगार न्यारी महिमा भारी ॥भारत०॥

१०-ममता न्यारी मुनि अगमे, अनशन व्रत धार्यो ।
अष्टादश त्रेपन साल पधारे स्वर्ग मझारी ॥भारत०॥

११–चतुर्दशी नरसिंहनी जग में जयकारी ।
ता दिन भये निर्वाण, सदा रटते नर-नारी ॥भारत०॥
१२–गावूं छूं गुण गुरुराज ना, मैं प्रेम धरीने ।
'हंस' हिये हरसाय, आयो शरण तिहारी ॥भारत०॥
—स्व० हंसराज करणावट
जोधपुर :

:: १५ ::

दोहाः—

१—सखे साथे संचरी गया मेडता ग्राम ।
धर्म-स्थानक धैर्य थी, कर्यो जाय मुकाम ॥
२—निहाली निज पुत्र ने, माता गई हरसाई ।
पूछे पास बोलाविने, केम रह्यो छे आंही ॥*

:: १६ ::

❀ रागः—भेख उतारो राजा भरतरी ❀

पिताः—केम रह्यो भाई ! एकलो,
मोकल्यो दास ने घेर जी ।
विचार व्हाला सूं धारियो,
पुत्र ! प्रकासो पेरजी ॥
अयोग्य करवूं आ नव घटे ॥

*संयम ग्रहण करने के पूर्व जब आचार्य श्री जी मेड़ता गए थे और वहां पूज्य श्री भूधरजी महाराज का उपदेश श्रवण कर जब वे वैरागी बन गए थे, उस समय उनके माता पिता और धर्म-पत्नी उन्हें समझाने के लिए मेड़ता आए थे—उस समय का एक प्रिय संवाद
—सम्पादक

पुत्र —पुण्यवन्त पिता प्रमाणिए,
आ भव नी आ सगाईजी ।
साथे कोई न सचरे
पिता स्त्री ने भाई जी ॥
अनुमति आपो मने आ क्षणे,
क्षण लाखिणी जायजी,
अनुमति आपो मोरा तातजी ॥

पिता —पुत्र रतन माहरो,
म्हारा कुल नो सिणगारजी ।
विविध वस्तु सुख भोगवो,
हमणा परणाई नारजी ॥अयोग्य०॥

पुत्र —सपना सम सुण जाणवा,
भूडा भोग - विलासजी ।
जोवन जाता थई जसे,
रूप रग नो नाशजी ॥अनुमति०॥

पिता —पुत्र बीजो नथी माहरे,
तू छे प्राण आधारजी ।
पुत्र विना नो मने करी,
अब नव था अणगारजी ॥अयोग्य०॥

पुत्र —सागर चक्री ने हुता,
साठ सहस्र कुमारजी ।
तो पिण नाम रह्यू नहीं,
साथे पहुंच्या यम द्वारजी ॥अनुमति०॥

माता —मात सुख-माटे महावीरजी,
अभिग्रह कर्यो गर्भ-वासजी ।

माता पिता मुवां पछे,
लीधो संजम - भारजी ॥ अयोग्य०॥

पुत्रः—ज्ञानी ए जाण्यो ज्ञान थी,
मात-पिता केरूं आयजी ।
तेह थी अभिग्रह ग्रह्यो,
ते समे हूँ नथी जाणतो मायजी ॥अनुमति०॥

काल अचानक आवि ने,
पकड़ी लेसे मुझ प्राणजी ।
तेह थी चेत्यो हूँ चूंप थी,
समझी सत गुरु आणजी ॥अनुमति०॥

माताः—माता पिता नी भक्ति नूं फळ,
भाख्यो ठाणंग - मांयजी ।
तेह थी निराश तुम नव करो,
ऊठे अंतर मां आगजी ॥अयोग्य०॥

पुत्रः—अनार्य देश नो अधिपति,
आर्द्र - कुमर अवधारजी ।
मोह तजी मगध-देश मां,
आली थयो अणगारजी ॥अनुमति०॥

मृग ने वन मां मारतां,
अंतर उपज्यो वैराग्यजी ।
देवा अभय दीक्षा ग्रही,
संजति समझयो महाभागजी ॥अनुमति०॥

माताः—पुत्र-मुख एक देखी ने,
लीजो संजम लालजी ।

वग वृद्धि थए वेग थी—
सजम लीजो सभाल जी ॥अयोग्य०॥

पुत्र —कुवर पणे दीक्षा ग्रही,
अयवतो अणगारजी।
थावच्चा पुत्र विना तजी,
बत्तीसो नारजी ॥अनुमति०॥

वश कोना रह्या विश्व मा
माता! मन मा विचार जी
मोह मुकी माता माहरो,
आपो आज्ञा ततकालजी ॥अनुमति०॥

स्त्री —पाणि-ग्रहण कर्यु प्रेम थी,
हेते ग्रही मुझ हाथ जी।
सुख आप्या विना साहिबा!
नव तजो कर नाथजी ॥अयोग्य०॥

दीक्षा लेवी हती तो पेहला,
नोथी परिणवी हती नारजी।

पति —आठ स्त्री जम्बू ए तजी,
परणीने पहली रात जी।
धन्ना शालिभद्रे धर्म मा,
ललनाओं ने मारी लात जी॥

सुन्दरी छोडो आ ससार ने,
जो होय पूरण प्रेम जी ॥टेर॥

स्त्री —तेओ भुगत-भोगी थई,
पछे थया अणगार जी।
तेम तने, सुख भोगवी,

२—धन्य - धन्य जयमलजी अणगारने
पाल्यो संजम खांडा केरी धारजो।
सुणिने पूज्य भूधरजीनुं व्याख्यान ते,
बोध पामीने लीधो संजम भार जो॥

३—तेह तणो वृत्तान्त आपूं छुं टूंक मां,
महेर करीने वांच जो सुधारी दोष जो।
भूल चूकनी माफी आप जो मुझने,
कीधी छे मैं बुद्धि अनुसारे जोड़ जो॥

❀ ढाल २ चौपाई ❀

१—मोटी मारवाड विशाल ज देश,
घणा-घणा आव्या छे प्रदेश।
शहेर मोटुं छे तिहां जोधपुर,
माणसो ऊपर सारूं छे नूर॥

२—तिहां वसे छे सेठ साहुकार,
लीला लहर लक्ष्मीनुं नहीं पार।
तेना ताने मेड़तानी पास,
गांव 'लांबियो' छे गुणरास॥

३—ठाकुर साहब छे गुणवान;
जयमलना पिता छे दीवान।
'मोहनदासजी' छे शुभनाम,
'महिमादे' पत्नी गुण-ग्राम॥

४—घणी ऋद्धि सिद्धी तस घेर,
छे लक्ष्मी तणी लीला ल्हेर।
तेना पुत्र नों आपुं चितार,
भयिष्य मां थाशे अणगार॥

५—महा धर्म धुरधर थाशे,
अविचल पदवी पाशे।
जिन शासनना सणगार,
तेने नमिये वारवार ॥

(३) साखी

कर्म गती बलवान छे, कहुँ छु साची वात।
महेर करीने सांभलो, नर नारी साक्षात ॥१॥
अपूर्व लाभ तो एज छे, शीयल तणी गुणखाण।
लेशे संजम प्रीत थी, वली शीलयनी पचखाण ॥२॥

(४) चौपाई

१—पूज्य भूधरजी महाराज,
महा धर्म धुरधर जहाज।
छे विद्वान घणा गुणोंनी खाण,
छे शास्त्रतणा वली महाजाण ॥
२—आपे व्याख्यान नो सारो बोध,
करवा आत्मतणो खास शोध।
एवे आव्या जयमलजी कुमार,
वेरो उपरागने सार ॥
३—चले ब्रह्मचर्य ऊपर व्याख्यान,
गयु जयमलजीनु तेपर ध्यान!
सांभलिने ते ऊभा थाय,
लोकोमां अचरज देखाय ॥
४—छे कुलवान वलि धानवान,
लक्ष्मी तणु पण नहि अभिमान।

तेनो वृत्तांत कहे भोगीलाल,
आ बाजु रखजो तुमें ख्याल ॥

ढाल—५ राग:—मैनादे नीर भर्या क्यों थारा नैण में

जयमलजी :—
स्वामीजी आपो शीयलव्रतनुं मुझ पच्चखाणजी ॥ टेर ॥

नौकर :—
आ वगर विचार्युं वरत लेतां तमे राखो भान जी ॥ टेर ॥

पूज्यजी :—
लइ रजा घेरथी आवो पहोंचाड़ी सहुने ध्यान जी ॥ टेर ॥

जयमलजी
१:—रजा लीधीछे म्हारा मननी अवर रजा नहीं होय।
शीयळव्रतनी बाधा आपो बीजुं न मांगु कोय जी ॥
स्वामीजी आपो शीयळ व्रतनुं मुझ पच्चखाणजी ॥टेर॥

नौकर
२:—नथी वळाव्युं आणुं पहेलां थया नहीं छम्मास।
परणेलीनुं त्याग करीने करो केम नीरासजी ॥
आ वगर विचार्युं वरत लेतां तमे राखो भानजी ॥टेर॥

पूज्यजी
३:—रजा लीधा विन व्रत अपाय नहिं ते साधुनी रीत।
मात-पितानी आज्ञा लइने करि आवो जइ प्रीतजी ॥
लइ रजा घेर थी आवो पहोंचाड़ी सहुने ध्यानजी ॥टेर॥

जयमलजी
४:—शाने माटे स्वामी मुझने करो आप हताश।
महर करी झट बाधा आपी करो पूर्ण अभिलाषजी ॥
स्वामीजी आपो शीयल व्रतनुं मुझ पचखाणजी ॥टेर॥

नौकर

५—पिता आपणा जाणे कदाचित आपे मुझने दोष ।
कृपाकरीने घेरे पधारो शान्त करीने जोशजी ॥
आ वगर विचार्युं वरत लेता तमे राखो भानजी ॥टेर॥

जयमल

६—वानला तू वहु चल्यो छु पर नी शी पचात ।
दीक्षा लेवी मारे नक्की समझे श् तु वानरे ॥
मत अतरायनी वातो कर वचमा, चुपको थावने ॥टेर॥

नौकर

७—कोप करो नहिं मुझपर स्वामी हूँ तु आपनो दास ।
परणेली नानी कुवारणी मनमा लीओ नियामजी ॥
आ वगर विचायुं वरत लेता तमे राखो भानजी ॥टेर॥

जयमल

८—दीक्षा लीधा विन मेडता बाहर कदी न म्हारे जावु ।
काल थाभलू अन्त आरोगे तो हूँ अनाज खानू र ॥
मत अतरायनी वातो कर वचमा चुपको थावने ॥टेर॥

नौकर

९—जई शेठने हू जणावु तेडी लावु अत्यार ।
कोप करो नहीं खाली मुझपर समझोनी कुवरजी ॥
आ वगर विचायुं वरत लेता तमे राखो भानजी ॥टेर॥

साखी

१०—आव्यो आप उतावलो, नोकर होय निराश ।
पूछे सेठजी पेखता, क्याँ जय ? किमतु उदास ॥

ढाल-६ (राग—पीलु)

नोंकर:—

१—शेठजी पुत्रने खूब समझाव्यो ।
तो ए तात साथ न आव्यो ॥

२—मुनी नुं व्याख्यान सुणी ने ।
पोते वाधा लेवानो विचार जणाव्यो ॥

३—घणुं कीधु त्यारे भाइनी मते खीज्या ।
वेस वेस तु मूक्य ने लवारो ॥

४—मुनी महाराज व्याख्यान वांचीने ।
व्याख्यानो खूब बोध सुनाव्यो ॥

५—घणुं कीधुं त्यारे छेवट पोते ।
दीक्षा लेवानो विचार जणाव्यो ॥

६—उपाय म्हारो चाल्यो नहीं त्यारे ।
हवे हुं आपने तेडवा आव्यो ॥

साखी

१—चितसां चमक्या सेठजी, तरत करीने रोप ।
बोले इस नोकर प्रते पूत्र प्रेम मन पोप ॥

ढाल—७ राग:—क्षत्रिय कलंक

१—पुत्र ने मूकी आवियो रे नीच नफट नादान ।
माइ लूण हराम तूं कर्यु अरे अनजान ॥

२—जयमल उपर प्रेम सहु वरपावे परिवार ।
शा दुःखे दीक्षा लई थाए ए अणगार ॥

३—हजुं एहने परण्ये थया नहीं पूरा छम्मास ।
जे सांभळशे बात आ करशे तेह्नी हास ॥

४—एहवा ते केहवा छे उपदेशक महाराज ?
जाके लावू जयमल्लने त्या चालो हमणा ज ॥

५—घोडा गाडी ऊट रथ करजे सहु तैयार ।
आवो जइने आवुं कर गाममा समाचार ॥

६—ली बोलावी नारिने तेहनो सहु परिवार ।
आव्या सहुए मेडते सुणो हवे अधिकार ॥

○

ढाल—८ राग —भेख रे उतारो राजा भरथरी

पिता १—पुत्र सुकुल तमे माहरा छो कुळना शणगारजी ।
केम बेठा अहिं एकला सुख भोगवो ससारजी ॥
पुत्र कह्यु मानो माहरू ॥ टेर ॥

पुत्र २—सारनथी समारमा किंचित सुख नहिं होयजी ।
एकज भवनी सगाइ छे नहि कोइ को इनु कोयजी ॥
रजा आपो मुजने तातजी ॥ टेर ॥

पिता ३—कुलवधू ने तु ज एक छे जीवन के रो आधारजी ।
ज्यारे पुत्र तेहने त्यारे थाजो अणगारजी ॥
पुत्रकह्यु मानो माहरुं ॥ टेर ॥

पुत्र ४—सागर चक्रीने हता साठ हजार कुमारजी ।
नाम एकेनव राखियु पोहच्या साथे जमद्वारजी ॥
रजा आपो मुजने तातजी ॥ टेर ॥

पिता ५—शाने तरछोडो दीकरा चाले आसू केरी धारजी ।
परणे हजु वखत थयो नहीं नारी नानेरी बाळजी ॥
पुत्र कह्यु मानो माहरू ॥ टेर ॥

जयमलजी
६:—विषय सुखमां आ जीवडो फरियो वार हजार जी।
तो ए तृप्ति न पामिओ सार न दीठो लगारजी ॥
रजा आपो ने मुझने तातजी ॥ टेर ॥

माता ७:—नवमास पेट वेठारिओ दुःख भोगव्या अपारजी।
शाने तरछोडो सहुने शाने थाओ अणगारजी ॥
मान कह्युं मारुं दीकरा ॥ टेर ॥

जयमल ८:—पूज्य मातुश्री माहरा सार नथी संसारजी।
बोध सुण्यो मैं मुनि तणुं नक्की थावुं अणगारजी ॥
रजा आपो मारी मावडी ॥ टेर ॥

माता ९:—शाने अटकळावो मात तातने न करावो खिन्नजी।
कचवाओ नहीं तमो परणेलीनुं मन्नजी ॥
मानकह्युं मारुं दीकरा ॥ टेर ॥

माता १०:—महावीर स्वामी थई गया मान्युं भाइनुं वचन्नजी।
बे वरस घरवास मांरह्या सुखी करियूं मन्नजी ॥
मानकह्युं मारुं दीकरा ॥ टेर ॥

जयमल११:—महावीर जिनेश्वर ज्ञानी हता ते तो नथी मुझपासजी।
मति श्रुति अने अवधिनो हतो जन्मथीज प्रकाशजी ॥
रजा आपो मारी मावडी ॥ टेर ॥

जयमल १२:—विषयसुख तो मातजी धूळना बाचका समानजी।
माने आपो उल्टो एवडो कुबोधते जहर जाणजी ॥
रजा आपो मारी मावड़ी ॥ टेर ॥

जयमल १३:—आ जीव रंक अने राय थयो फरियो फेरा हजारजी।
सो ए सार्थक नहि थियु समझो माता लगारजी ॥
रजा आपो मुझने मावड़ी ॥ टेर ॥

माता १४—परणाव्यो पुत्र तुझने दया आवे तुम नारजी।
तर छोडी दीचा लेशो तो एने कोनो अधारजी॥
मान कह्यु मारु दीकरा॥ टेर॥

जयमल १५—आधार छे माता मोटवु श्रीजगत के रो नाथजी।
धर्म करणी जो करशे एह तो मोक्ष लेशे मारी साथजी॥
रजा आपो मोरी मावडी॥ टेर॥

स्त्री १६—आनु करवु हतु तो नाथजी नोहोती परणवी नारजी।
छ महिना तो थया नथी केम दीक्षा लेवा थया त्यारजी॥
तरुणी त्यागो न कथजी॥ टेर॥

जयमल १७—विपछे विषयसुख सुदरी सारनथी लगारजी।
कल्पित भामा ससार ना इद्रधनुप चणियारजी॥
सजम लेओनी तमे सुदरी॥ टेर॥

स्त्री १८—आधारस्वामी मारे आपनो तुहिज जीवन प्राणजी।
दया लावो नाथ माहरा न तजो चतुर सुजाणजी॥
तरुणी त्यागो न कथजी॥ टेर॥

जयमल १९—सुण प्यारी जिन धर्म ए आपण सहुनो आधारजी।
दया नहिं ए हिंसा आत्मनी भोगो भवभवना रोमारजी॥
सजम लेओनी सुन्दरी॥ठेर॥

जयमल २०—सुण सुन्दरी तु मानती पण छे दु खना भडारजी।
सयोग पाछळ वियोग छे वागशे जम केरा मारजी॥
सजम लेओनी सुन्दरी॥टेर॥

स्त्री २० :–धन्नो शालीभद्र थइगया सुख भोगव्या संसारजी।
दीक्षा लीधी पछी छेवटे माटे अरज अवधारजी ॥
तरुणी त्यागो न कंथजी ॥टेर॥

जयमल २२ :–धन्नो शालीभद्र थई गया हती बोधनी कचासजी।
छेवट बोध ज लागियो साथे तज्यो गृहवासजी ॥
संजम लेओनी सुन्दरी ॥टेर॥

जयमल २३ :–आ जीव घणा भोग भोगव्या भव अनंत मजारजी।
त्यारेज बारंबार जीवड़ो समझे ते ओने सारजी ॥
संजम लेओनी सुन्दरी ॥टेर॥

जयमल २४:–पण तृप्त न थायशे वधशे ज्युं अगनि झाळजी।
संतोषथी सुख पामशो लो जिन वचन संभालजी ॥
संजम लेओनी सुन्दरी ॥टेर॥

जयमल २५ :–जम्बू कुंवर थई गया परण्या आठे नारजी।
एक ज रातमां त्यागिने संजमलीधो स्हवारजी ॥
संजम लेओनी सुन्दरी ॥टेर॥

स्त्री २६ :–दाखला स्वामी आवा नव दियो हुँ तो अर्द्धाङ्गिनी नारजी।
सुख भोगवो सारी साथमा लळि लळि करूं नमस्कारजी ॥
तरुणी त्यागो न कंथजी ॥टेर॥

स्त्री २७ :–हुँ एकली जीव एकलो मारे कोनो आधारजी।
शो गुनो स्वामी मैं कर्यो शा दुःखे थाओ अणगारजी ॥
तरुणी त्यागो न कंथजी ॥टेर॥

स्त्री —अरज साभलो नाथ माहरी पूरो दासीनी आशजी ।
वदू स्वामी तम पायने खोळा पाथरू आवारजी ॥
तरुणी त्यागो न कथजी ॥टेर॥

जयमल —शाने गभरायो छो मू दरी मानो माह वचनजी ।
वधव समान मनें गणी सुखी करो तमे मनजी ॥
रजा आपो मने बेनडी ॥टेर॥

स्त्री —बेन स्वामी मुझने नव कहो हूँ तो दासी छू चरणारजी ।
छोकरपण स्वामी नव करो मानो मने अर्धंगना नारजी ॥
करुणा आणोनी कथजी ॥टेर॥

जयमल —एकज माताना जोडला भाई वहन समानजी ।
कह्यु मानीने वेन माहरू माया मूको तमामजी ॥
वधव समान मने गणो ॥टेर॥

स्त्री —ससार सकल तोडी स्वामीजी धन्य थारो अवतारजी
हुं पण दीक्षा साथे लऊं करू उग्र विहारजी ॥
धन्यवाद छे नाथ आपने ॥टेर॥

सवाद वत्तीसी नामनी नवमी छे ए ढाळजी ।
धन्य ए दपति वेउने वदे नित भोगीलालजी ॥
धन - धन श्री जयमल्ल ने ॥टेर॥

❀ दोहा ❀

१—दीक्षा लीधी दपती तपस्या करी अपार ।
अचरज घणु ज पामिया देश विदेश नरनार ॥
२—घणा परीपहने वळी उपसर्ग सह्या अनेक ।
जिन शासन दीपावियो वरत्या धरा विवेक ॥

३—संक्षेपे दूहा वरणव्यो जीवन चरित्र-संबंध ।
विस्तार गुरुमुख जाणजो सद्गुण सरस सुगंध ॥

४—हिवे सुणो तपस्या वळी करणी कीधी जेण ।
आतम थाशे ऊजळी टळशे दुक्ख खनेण ॥

❀ ढाल १० मी राग:—वनजारा नी ❀

तमे सांभळजो नरनारी,
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥टेर॥

१—सोळ वर्ष एकांतर कीधा ।
सूत्र मुख पाठे घणा कीधा जी ॥
कष्टो भोगव्या अतिभारी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥

२—निज पलिए दीक्षा लीधी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥
गुण पतिव्रतानु धारी ।
कहुं तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥

३—छठ - छठ पारणा करतां ।
कर्म राजानी साथे लडतांजी ॥
त्रण वरस-कीधा तप भारी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥

४—अट्ठम पारणा मुनिए लीधा ।
वे वरसमां पूरा कीधाजी ॥
वळी अट्ठाइओ कीधी चाळी ।
कहुं तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥

५—पच्चास वरस मुनि पोते ।
नव सूता दहाड़े के रातेजी ॥

धन्य धन्य जयमल अणगारी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥
६—मास खमण मुनिए कीधा ।
वीश वखत पूरा कीधा जी ॥
बेमास खमणा तप धारी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥
७—त्रण मास खमणा पचख्या भाई ।
लोक मनमा पाम्या नवाई जी ॥
धन्य धन्य जयमल अणगारी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥
८—चोमासी तप मुनि ए धार्या ।
कई श्रावकोने खूब तार्याजी ॥
शरीर उपमा पिंजर भारी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥
९—रग गामतणा बदलाया ।
आगी शिष्ये सथारा पचखायाजी ॥
चाल्यो मास एक आडग धारी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥
१०—साठ भक्त अणसण छेदीने ।
घणी कर्म स्थिती भेदीने ॥
सुद चवदस वैसाख दिव धारी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥
११—वर्ष चौसठ मास पाच जाणो ।
उपर दिवस पच्चीस प्रमाणो ॥
पाल्यो सजम खाडारी धारी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥

१२—कहीं वात साची भोगीलाल ।
सर्व सांभळो दिल उजमाल ॥
ज्यूं पामो भवजल पारी ।
कहुं तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥

१३—संवत उगणीसे इकोतर साल ।
चैत्र सुदि चवदस मंगलवारे जी ॥
कीधी जोड़ आत्मा तारी ।
कहुँ तपस्या मुनिनी सुखकारी ॥

❀ दोहा ❀

१—गुणी जनोंना गुण कर्या, आव्यो मन आनन्द ।
नहिं जाणूं कविता कळा, काव्य नियम पुनि छंद ॥

२—सुधी लोग सुधारजो, करजो रसनो पोष ।
आतम निज उद्धारजो, तो थास्ये संतोष ॥

अहमदाबाद —भोगीलाल रतनचंद वोरा

आचार्य-वर
श्री सवलदासजी
महाराज

जन्म— वि० सं० १८२८ भादवा सुद १२, पोकरण

दीक्षा— „ „ १८४२ मार्गशीर्ष सुद ३, बुचकला

स्वर्गवास— „ „ १९०३ वैशाख सुद ६, सोजत

आसकरण-पूज्यस्य, शिष्य-रत्न-महोदयम् ।
सवल शातमाचार्य, वदे भक्ति-पुरस्सरम् ॥

—मधुकर मुनि

दोहा

१—चरण-कमल जिन राज ना, प्रणमी वारंवार।
गुण कहीस गुरु-देव ना, सुनो भविक नर-नार॥

:: १ ::

❀ रागः—उदयापुर-आलसी रे ❀

१—जंबू-द्वीप ना भरत में रे,
'मरुधर' देश सुठाम ।
नगर 'जोधाणे'—परगने रे,
'पोकरण' शहर सुग्राम ॥
भविक जन ! सांभलो श्री पूज्य तणा गुण-ग्राम ॥

२—तिण नगरी मांहे वसेजी,
'आनन्दरामजी' नाम ।
लूणिया-ओस-वंश मां जी,
नारी रो 'सुन्दर' नाम ॥

३—ज्यांरी कूखे ऊपनाजी,
जनम्या भादव-मास ॥
अट्ठारे सौ अठाईस मां जी,
पाम्या हरस-हूलास ॥भविक०॥

४—जथा-जोग ओच्छव करीजी,
विध सूं दसोठण कीध ।
माइतां बहु-हर्ष सूं जी,
'सबलदासजी' नाम दीध ॥भविक०॥

५—अनुक्रमे मोटा हुवाजी,
माइतां कीधो काल ।

भूवा भगति करे भलीजी,
जाणे आप रो लाल ॥भविक०॥

६—जोधाणे सिघवी-वश मा जी,
भूवा री परणाई बाल ।
तिण सू मिलण कारणेजी,
हर्ष थी आया चाल ॥भविक०॥

७—पूज्य 'आसकरणजी' विचरताजी,
आया शहर-मझार ।
वाणी सुण वेरागियाजी,
जाण्या अथिर ससार ॥भविक०॥

८—घणा हठ सू लीनी आगन्याजी,
बेंयालिमे मिगसर मास ।
सुदी तीज सजम आदर्योजी,
'बुचकले''रीया' रे पास ॥भविक०॥

९—भणी गुणी पडित हुवाजी,
गुरु-भक्ति मा लीन ।
विनय वेयावच नित साचवेजी,
आज्ञा मां प्रवीण ॥भविक०॥

१०—विचरे देश - दिसावरॉजी,
करता धर्म - उद्योत ।
मिथ्यात-तिमिर मिटायनेजी,
खुलाई समकित-जोत ॥भविक॥

११—सवत अट्ठारे सो वेयासियेजी,
'जोधाणे' मात र माय ।
चाढ़ई मघ हर्ष सू जी,
दीनी पिछेवडी ओढाय ॥भविक०॥

:: २ ::

❀ रागः—महलां में बैठी हो रानी कमलावती ❀

१—पूज तो दीपे हो च्यारूं संघ में,
तारां विचे जिम चंद।
देखत दर्शन पुनवंत जीवनूं,
उपजे परम आनंद ॥
'सबलदासजी' हो पूज्यजी दीपता ॥

२—सरल-स्वभावी हो भद्रिक आतमा,
अल्प कषाय ने मान।
सूत्र नी सज्झाय नित प्रति साचवे,
ध्यावे चित्त निर्मल ध्यान ॥सवल०॥

३—गुरु - भायां री जोड़ी दीपती,
चेला पिण सुविनीत।
वचन प्रमाण करे आप रो,
पक्की तुम्हारी प्रतीत ॥सवल०॥

४—साधु - आचार मांहे ऊजला,
समिति - गुप्ति - प्रतिपन्न।
अनेक गुणां करने दीपता,
लोग कहे धन - धन ॥सवल०॥

५—घणा तो कीना साधु-साधवी,
दीक्षा दीधी दिल-सुद्ध।
धर्म-संबंधी साज देवा तणी,
हूँती निर्मल बुद्ध ॥ सवल० ॥

६—अन्य टोलां रा साधु-साधवी,
करे तुम्हरा गुण-ग्रास।

सरल स्वभावी नह कदागरो,
सदसू मन-सुद्ध परिणाम ॥ सबल० ॥

७—गावा-नगरा री आवे विणती,
दरसण री घणी चाय ।
पूज पधार्या नफो नीपजे,
धर्म-ध्यान बहु थाय ॥ सबल० ॥

८—पुण्य प्रबल पूज्यजी ! आपरो,
जिहा पधारो तिहा जीत !
श्रावक श्राविका विनय साचवे,
सेवा करे रूडी रीत ॥ सबल० ॥

६—पाट दीपायो श्री गुरुदेव नो,
सकल सघ नी साख ।
जस ने महिमा फेली जगत में,
लोग सहु वत्तीसी रहा दाख ॥सबल०॥

सोरठा

१—वरस सरस इक्कीस, पाट रह्या थिर थाट सू ।
सुद्ध संजम निस-दीस, वरस साढा वासठ लगी ॥
२—नगर-'सुभट पुर' माय, पूज पधार्या विचरता ।
विनती लीवी मनाय, होली-चौमासा तणी ॥

3

ॐ राग —पूज्यजी पधारो हो नगरी, हम तणी ॐ

१—'पाली'-पीठ री आवे विनती,
श्रावक कहे कर जोड हो—महामुनि !

आपने पधार्यां हो वरस घणा हुवा,
दरसण दीजे धर कोड़ हो—॥महा० पूज्य॥
पूज्यजी पधारो हो अरजी मानने ॥

२—संवत उगणीसे हो तिया वरस में,
सील सातम चेत मास हो—॥महा०॥
पाली पधारिया संघ घणो हरसियो,
सेवा करे चित्त-हुल्लास हो—॥महा०पूज्य०॥

३—'सोजत' सहर री आई घणी वीनती,
पूज्यजी वेग पधार हो—॥महा०॥
वैशाख वद दसम रे दिने,
सोजत पधार्यां सनिवार हो ॥महा० पूज्य०॥

४—'आखा तीज' करी विहार करां,
श्रावक-श्राविका जोड़्या हाथ हो—॥महा०॥
घणां वरसां सूं हो आप पधारिया,
कृपा करो, कृपा - नाथ हो—॥महा०पूज्य०॥

५—आठम मानी हो पूज कृपा करी,
वैशाख सुद नवमी तिथ हो--॥महा०॥
धर्म सुणायो हो मोटी धुन्न सूं,
सुख-साता सह रीत हो ॥महा०पूज्य०॥

६—पड़िकमणो कर समरणी फेर ने,
सूत्र नी कीधी सज्झाय हो ॥महा०॥
किंचित छाती नी वेदना,—
उपनी,साध रह्या मसलाय हो ॥महा०पूज्य०॥

७—एक उबासी आवतां, गावड़ ढेरढी,
कियो स्वर्गपुरी में वास हो—॥महा०॥

सागारी अरणसण सदा रजनी तणो,
छेले मास छमास हो—॥महा० पूज्य ॥

४

❀ राग —समायची ❀

१—पूज्य 'सबलदासजी' मुनिराया
पुन्य जोगे म्हें पाया
बारह बरसा रा संजम लीधो
बालक-वय रे माया
पूज्य 'आसकरणजी' जिसा गुरु भेट्या,
भणी-गुणी पंडित थाया ॥पूज्य०॥

२—विनय करी गुरुदेव रींझाने,
आज्ञा आराधे चित्त लाया ॥पूज्य०॥
सरल-चित्त, दिल नहिं है कुटिलता,
वस किया मन-वच-काया ॥पूज्य०॥

३—वाड-सहित ब्रह्म-व्रत पाले,
संजम – गुण दीपाया ॥पूज्य०॥
धर्म-साज अनेका ने दीधो,
बहु सिरा सिरणी कराया ॥पूज्य०॥

४—केसरिया उपसम ना कीना,
पाप थी सकोची काया ॥पूज्य०॥
सनर पेटी कमर कसी ने,
ज्ञान घोड़े चढ्या ऋषि-राया ॥पूज्य०॥

५—समकित-सेल चमा-खड्ग ले,
दया ढाल की ओट दिराया ॥पूज्य०॥

क्रिया-कबाण ताण कर खेंची,
तप का तीर चलाया—॥पूज्य०॥

६—धर्म राय नी सेन सबल ले,
कर्म कटक हटाया ॥पूज्य०॥
साधिक वर्ष चहोत्तर ऊमर,
भोगवी स्वर्ग सिधाया—॥पूज्य०॥

७—'हीराचंद' मुनि मन आनंदे,
गुरु-सेवा ना गुण गाया ॥पूज्य०॥
भाद्रवे उगणीसे चौका में
'अहिपुर'* नगर रे मांया ॥पूज्य०॥

❀ कलश ❀

१—संघ - नायक सुख - दायक
किया घणा उपगार ए ।
श्री 'शबलेश' अशेष गुण नो,
कहतों न लागूं पार ए ॥

२—दाद - गुरु पर - दाद - गुरुजो,
निज-गुरुजी निरमल वीधए ।
सत - गुरु - सेवा अमृत-मेवा,
जाणी ने बहु कीधए ॥

*नागौर

३—ढाल-चउपई तवन भल भल,
रचियो बहुलो ग्रन्थ ए।
सूत्र अरथ सज्झाय करने,
साध्यो 'शिवपुर' पथ ए॥

४—गुणवत पुरुष ना गुण-वर्णन,
करता हुए निस्तार ए।
सुख सपत वढे दिन-दिन,
आनन्द हरष अपार ए॥

—स्वर्गीय पूज्य श्री हीराचन्दजी महाराज

शुद्ध साधुत्व !

☆

१—अप्रमत्त जे सदा रहे

नवी हर्षे नवी सोचे रे

साधु सुधा ते आतमा

श्युं मुंडये श्युं लोचेरे ?

—महोपाध्याय यशोविजयजी

२—निरखी ने नव यौवना,

लेश न विषय निदान

समझे जे काष्ठ नी पुतली सम

ते छे भगवान समान

—योगीराज श्रीमद् रायचन्द्रजी

स्वामीजी
श्री बुधमलजी
महाराज

जन्म — बणार (जोधपुर)

दीक्षा — वि० स० १८६६ पोष सुद ६ महामंदिर

स्वर्गवास— वि० स० १९२६ वैशाख सुद १० नागोर
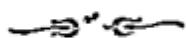
सुन्दराक्षर - सयुक्त, शास्त्र - लेखन - तत्परम्,
बुधमल्ल - महाराज वंदे भक्ति-पुरस्सरम् ॥

—मधुकर मुनि

दोहा

१—वीर नमूं शासन-धणी, गणधर लागूं पाय।
गुरु-तणा गुण गावतां, सुणतां आनंद थाय॥

२—आचारज ना गुण अठे, कहतां नावे पार।
पिण संक्षेपे वर्णवूं, बुद्धि-तणे अनुसार॥

:: १ ::

❀ रागः—अलबेल्या ❀

१—जंबू-द्वीप ना भरत में रे लाल,
'मरुधर' देश श्रीकार हो—भविक जन
पुर 'जोधाणे' रे परगने रे लाल,
ग्राम 'बगार' सुख-कार हो ॥भ०ज०॥
गुरु-तणा गुण सांभलो रे लाल॥

२—तिण गांव मांहे वसे रे लाल,
'कपूरचंदजी' नाम हो—भ० ज०
जात 'सेठिया' दीपता रे लाल,
'पन्नाजी' नार अभिराम हो ॥भ०ज०गुरु०॥

३—'पन्नाजी' री कूखे अवतर्या रे लाल,
जनम्या सवा नव मास हो—भ० न०
जन्म-महिमा हरखे करी रे लाल,
'बुधमलजी' नाम दीध हुल्लास हो ॥भ०ज०गुरु०॥

४—अनुक्रमे मोटा हुवा रे लाल,
केटला वरसां मां थाय हो ॥भ० ज०॥
(६) ५ 'नवाब मीरखान' रा भय थकी रे लाल,
आप जाय वस्या जोधाण रे मांय हो ॥भ०ज०गुरु०॥

५—युद्ध कियो नृप 'मान' सु रे लाल,
नबाब तिण वार हो— ॥ भ० ज० ॥
गोला - नाल छूटता आवियो रे लाल,
गोलो अति दुख-कार हो ॥भ०ज०गुरु०॥

६—बारण ऊभा तुम मातजी रे लाल,
गोलो आयो तिण - वार हो ॥ भ० ज० ॥
शरीर टलियो, कपडो बलियो रे लाल,
पुन्य - तणे अनुसार हो ॥भ०ज०गुरु०॥

७—नृप मान 'नबाब' रे रे लाल
सपत हुवो छे ताम हो— ॥ भ० ज० ॥
सुख शाता हुवा छता रे लाल,
पाछा आया निज - ग्राम हो— ॥भ०ज०गुरु०॥

८—बरस च्यार तथा पाचमू रे लाल,
निज - ग्राम रहाय हो— ॥ भ० ज० ॥
माता पिता पुत्र तीनू जणा रे लाल,
आप पधार्या 'जयपुर' माय हो ॥भ०ज०गुरु०॥

६—पहली ढाल मे ग्वतलो रे लाल,
जन्मादिक अधिकार हो— ॥ भ० ज० ॥
आगे हुवो ते साभलो रे लाल,
एकाग्र - चित्ते धार हो ॥भ०ज०गुरु०॥

❀ दोहा ❀

१— पडित वेत्ता शास्त्र ना, कहे धर्म नी वाण।
'नानकाजी' आर्जका भणी, भेटया पन्नाजी आण ॥

:: २ ::

❀ राग:—पन्ना मारु खेलण दो गणगौर ❀

१—नानगांजी महासतियां बोले,
सुण बाई ! सुविचार ।
धर्म कियां जीवड़ो सुख पावे,
नहिं पावे दुःख लिगार—बाईजी ! नहीं,
मानव रो भव पावणो दुक्कर ते किम जावो हार ॥

२—आयु अथिर अछे जग में,
कुशाग्र जिम वार ।
विलावतां कोई वार न लागे,
किम नीम देवो अपार-बाईजी किम० मानव०

३—न पिण कोई साथ में चाले,
रहसी सबही लार ।
धर्म कियां विन गोता खासी,
अवसर में चेतो विचार-बाईजी ॥अव० मानव०॥

४—कुटुम्ब सहू कोई मुतलब अर्थी,
विन मुतलब न करे सार ।
तिण रा मोह सूं फंद में पड़ने,
मानव-भव मत हार-बाईजी० मानव ॥मानव०॥

५—इम उपदेश सुणी ने भिन्न-भिन्न,
'पन्नाजी' ते तिण वार ।
सब संसार अथिर जाणी कहे,
हुँ लेसूं संजम-भार—गुरुणीजी० हूँ० ॥मानव०॥

६—इम कही गुरुणीजी ने,
कंत पुत्र पे कहे विचार ।

ससार में कारमो जाएयो,
सजम लेमूं सुख-कार—
सुणोजी—आज्ञा देवो इण नार ॥
७—इसडा वचन सुणी ने, बोले,
इण पर सार।
अथिर ससार में पिण छोडी,
मुनि थासा छोड जजाळ-माताजी मुनि० ॥मानव०॥
८—माताजी आप रा आर्जका हुवा,
नानगाजी रे पास।
सूत्र पनरे भएया भली परे,
आणी चित्त उल्लास-हिलमा आणी० ॥मानव०॥
९—पडित पूज्य श्री 'आसकरणजी'
जोधाणे नगर—मझार।
भव-जीवा ने तारक पुन्या,
पधार्या सुख-कार—पूज्यजी० पधा० ॥मानव०॥
१०—दूजी ढाल मे एतलो भाख्यो,
वेराग नो अधिकार।
भव-प्राणी आगे साभलजो,
दीक्षा नो विसतार-भवि जन दीक्षा० ॥मानव०॥

—दोहा—

१—पिता पुत्र परस्पर कहे, तारण तिरण-जहाज।
पूज्य समीप जायने, सजम ल्या हित-काज॥

३

[आज शहर मे हजा मार सी पडे]

१—'जयपुर' नगर थी जोधाणे आविया,
पूज्य आसकरणजी रे पास—चतुर नर।

:: ४ ::

❀ राग :—खयाल की ❀

१—'मरु-स्थल' जनपद मांहे सरे,
विचर्या आप अपार।
धर्म-उपगार बहुलो कियो सरे!
कहतां नावे पार हो—
महाराजा मुनिवर आप दीपायो मारग जैन रो ॥

२—'अहि' 'जोध' 'सोजत' पुरे सरे,
पाली - पीठ मझार।
चोमासा घणा किया सरे,
धर्म बहु विचार ॥महा०॥

३—'फलवद्धी' कुचामणे सरे,
'पीपलिये' फेर ग्राम।
'डेह' मांय वली जाणीए सरे,
दोय-दोय हित-काम ॥महा०॥

४—'जयपुर' 'झालरापत्तने' सरे,
कुचामणे पिण जाण।
'कुचेरे' 'तींवरी' ग्राम में सरे,
एक-एक बखाण ॥महा०॥

५—संबत उगणीसे सप्तदशे सरे;
'अहिपुरे' थिर ठाण।
श्रावक सेवा साचवे सरे,
मन में हरसज आण ॥महा०॥

६—पट-बीस वरसे माधवे सरे,
वेदना छपनी ताप।
दिवस चालीस लग अत थकी सरे,
रुचना भई नीकाम ॥महा०॥

७—किंचित 'मिसरी' पर रुचि रही सर,
अल्प-जले अभिलास।
सावधान पणो अति घणो सर,
सदा ज्ञान अभ्यास ॥महा०॥

८—साधु - श्रावका कोई भणीसरे,
ढोक ढग - पचखाण।
बोलादिक पूछ्या थका सरे,
उत्तर दे हित आण ॥महा०॥

९—कीकर कर दो मेलने सरे,
एम करे अरदास।
धरम - साज रो मुझ भणी सरे,
ज्यू मिटे गर्भावास ॥महा०॥

४

❀ राग —गौरादे बाई आज वसोनी म्हारा शहर मा ❀

१—वैशाख - शुक्ल नवमी दिने,
चरम - वास मझारो-श्रीजी राज-
किंचित अशन आरोगता,
भेद भई तिणवारो - श्रीजी राज
आप सधारो कियो दीपतो ॥

२--तब श्रावक सर्व वीनवे,
अनशन करो महाराजो- श्री०
तब कहे अवसर आवियो,
करूं संथारो हित-काजो- श्री० आप०॥

३--सागारी अणसण करो,
श्रावक कहे कर - जोड़- श्री०
सागारी तब अणसण कियो,
मन में अति आणी कोड़- श्री० आप०॥

४--चरम - निशा ने अवसरे,
सास - तणी ऊठी खेद- श्री०
महाव्रत पांच उजवालिया,
अधिक धरम - उम्मेद- श्री० आप०

५--दिवस - उदय गाफिल थया,
वादी - तणे प्रकोप- श्री०
यास दिवस पछे सावधान थया,
किस्तूरी दीध अनूप श्री० आप०

६--वचन प्रधान सुउचरे
अणसण करावो इणवारो- श्री०
ततखिण पाठ उचरावियो,
चरम-पद पोते उचारो- श्री० आप०

७--पंच पद समरण करे,
अणसण-मांहे एक ध्यान- श्री०
नव घड़ी दिन चढ्यां पचखियो,
रयो च्यार घड़ी प्रमाण- श्री० आप०

८—त्रयोदश घटी दिन आवियां,
आप हुवा देव - लोक– श्री०
धन - धन आपने कहे,
घणा, लोगा रा थोक– श्री० आप०

❀ कलवा ❀

१—वैशाख - सुद दशमी दिने,
सत गुरु कियो सथार ए।
घणा जन इणविध ऊचरे,
मुनि सफल कियो अवतार ए ॥
२—ज्ञान - ध्यान - मग्न दिन दिन,
रह्याज अधिका लाग ए।
बुधवत हुवा बुधमलजी,
जग मे बहु सौभाग्य ए ॥

—स्वर्गीय स्वामीजी श्री फकीरचदजी महाराज

❀ दोहा ❀

१—अरिहन्त सिद्ध समरू सदा, आचारज उवझाय।
वदू सर्व साधु भणी, सर्व-जीव सुखदाय ॥
२—पूज महाराज श्री गुरुदेवजी,'आसकरणजी' महाराय।
तिन के शिष्य बखाणता, पातक दूर पलाय ॥
३—चतुर्विध सघ दीपतो, मोटा श्री अणगार।
पर उपगारी परम-गुरु, मुनिवर बाल-ब्रह्मचार ॥
४—पूज 'आसकरणजी' दीपता, तिण रा शिष्य-सरदार।
मुनिवर 'बुधमलजी' शोभता, गुण-रतन भडार ॥

:: ६ ::

❀ राग ख्याल की ❀

१—जंबू-द्वीप द्वीपां विचेसरे,
जिण में भरत-क्षेत्र सार।
मरुधर देश दीपतो सरे,
तिण में गांव 'वणार' रे।
'वुधमलजी' स्वामी आप विराजो नागोर शहर में ॥

२—'कपूरचंदजी' तात तुम्हारा,
'पन्नाजी' तुम माय।
तास कूखे अवतर्यास कांई,
'वुधमलजी' सुख-दायरे ॥वुध०॥

३—शुभ-मुहूरत में जनमियास कांई,
कुंवर अति-सुखदाय।
नाम दियो दीपतो स कांई,
'वुधमलजी' वुध-सवायरे ॥वुध०॥

४—दश वरस लग खेलियास कांई,
वाल - पणारे मांय।
मन-वेरागज ऊपनोस कांई,
साथे वाप ने माय रे ॥वुध०॥

५—'महामंदिर' उच्छव कियोस कांई,
दीक्षा दीधी कागे आय।
पूज्य 'संवलदासजी' मोटकास कांई,
पड़िकमणो दियो सिखाय रे ॥वुध०॥

६—वड़ी दीक्षा दी पूज्यजी सरे
आसकरणजी महाराज।

सिख तो कीधा आपरा स काई,
उपगारी मुनिराज रे ॥बुध०॥

७—मात तुम्हारी पन्नाजी सरे,
गुरुणी 'नानगाजी' गुण-खान।
जयपुर मे दीक्षा दीवी स काई,
था अवसर रा जाण रे ॥बुध०॥

८—पाच महाव्रत पालतास काई,
पाले पाच आचार।
कनक कामनी त्यागनेस काई,
ज्ञान-तणा भडार रे ॥बुध०॥

९—दिन थोडा रे अवसरे रे,
हुवा पडित सुजाण।
कठ-कला अति सुहावणी सरे,
वाचे सरस वखाण रे ॥बुध०॥

१०—गिरवा गहरा गुण घणासरे,
छकाया—रखवार।
आप तिरे पर-तारता सरे,
धन धन थारा ब्रह्मचार रे ॥बुध०॥

११—बडा बाधव मासियाजीसरे,
'हीराचदजी' सुकुमाल।
सब मुनीसर सोभता सरे,
मोत्या फेरी माल रे ॥बुध०॥

१२—मिश्र आज्ञाकारी दीपता सरे,
गुण-मणी-रतन भडार।

पंडित चेला सिख वडासरे,
'फकीरचन्द'जी अणगार रे ॥बुध०॥

१३—'नागोर' शहरज दीपतो सरे,
जठे पधार्या आप ।
भाई - वाई सेवा करेसरे,
जपे जिनवरजी रो जाप रे ॥बुध०॥

१४—संवत उगणीसे वाईसरे रे,
'नागोर' सेखे काल ।
'उदीयांजी' आर्याजी वीनवे सरे,
आ गुणांरी ढाल रे ॥बुध०॥

—स्वर्गीया सतीजी श्री उदियाजी महाराज

स्वर्गीय
स्वामीजी
श्री फकीरचन्दजी
महाराज

जन्म स्थान— वीसलपुर

दीक्षा— नागौर

स्वर्गवास— वि० स० १६४६ चैत्र शुक्ला १३ ब्यावर

विविध - वाङ्मय - ज्ञान, तर्क - वितर्क - भास्वरम् ।
मुनि - फकीरचन्द्राख्यं वंदे भक्ति - पुरस्सरम् ॥

—मधुकर मुनि

:: १ ::

❀ राग : .... ❀

१—जोधाणा थी उगुणी दिशा में,
'विशलपुर' सुख - कारा ।
सेठ-शिरोमणि 'नरसिंहदासजी'
खांप मुणोत - वाला ॥

संघ मिल जपो जाप-माला रे-संघ,
'फकीरचंद' महाराज नाम की सदा बोल-बाला ॥

२—'कुनणा' नार अनोपम सुन्दर,
शील - गुणे सितारा ।
तस - कूखे अवतर्या स्वामी,
पूरण - पुन - धारा ॥ संघ० ॥

३—मोच्छव करने नामज दीधो,
'फकीरचंद' थांरा
'किस्तूरचंद' लघु भ्रात अनोपम,
शशियर - दिनकारा ॥ संघ० ॥

४—षोडश वर्ष भए नचीता,
पिता कीध काला ।
माता संजम लियो घर छांडी,
भाई पिण लारा ॥

५—गृहस्थाचारे वर्ष अठारे,
रह्या कुंवारा
बुध-सागर 'बुधमल' गुरु भेंटी,
हुवा अणगारा ॥ संघ० ॥

६—विनय करी गुरुदेव रिझायी,
भण्या अंग सारा ।
छेद मूल उपांग पइन्ना,
लिया कंठ - धारा ॥ सघ० ॥

७—व्याकरण छन्द ज्योतिष स्वरोदय,
और वेद न्यारा,
पुराण कुरान ने डिंगल पिंगल,
न्याय नाम - माला ॥ सघ० ॥

८—इत्यादिक शब्द अर्थ पाठ थी,
निर्युक्ति टीका रा ।
शास्त्र प्रमाणे चोडे बोले,
पचागी — वाला ॥ सघ० ॥

९—अज्जव मद्दव ने वली लाघवता,
सत्य - शौच - धारा ।
क्षमा-सागर अगाध-भवोदधि—
तारण - तिरण - हारा ॥ सघ० ॥

१०—गुरु भक्त ने भद्रिक-परिणामी,
निर्मल निरहंकारा ।
ज्ञानी ध्यानी ऐसा नहीं जग मे,
देख्या अणगारा ॥ सघ० ॥

११—वर्ष छत्तीस गुरु-सग रह्या,
दिया मात - सथारा ।
गुरु-कृपा मे हुवा उत्तरायण,
लीनो सूत्र विचारा ॥ सघ० ॥

१२—तेरहपंथी निन्हव घेटा,
जिन का मद गाला ।
समकित थाय मिथ्यात उथाप्यो,
घर में कर उजियाला ॥ संघ० ॥

१३—नया-नगर शहर बड भावे,
आय शाल छियाला ।
श्रावक सेवा सारे मन चढ़ते,
वूढा अरू वाला ॥ संघ० ॥

१४—सुण असाता 'शोभ' मुनीसर,
तिंवरी थी तिणवारा ।
विहार करी ने आया वेग सूं,
पूरण - भक्ति - वाला ॥ संघ० ॥

१५—चैत वदी बारस ने दिवसे,
मनसूं कीध संथारा ।
मन-वच-काय लाय शुभ-ध्याने,
शुक्ल पक्ष - धारा ॥ संघ० ॥

१६—तेरस प्रभाते काल करीने,
अमर - देह - धारा ।
'जोर' कलियुग में ऐसा,
विरला अणगारा ॥ संघ० ॥

१७—साल तेपने विचरत आया,
गांव वडा 'हरसाला'
पोष सुदी तेरस के दिवसे
शीत का अधिक प्रचारा ॥ संघ० ॥

—स्व० स्वामीजी श्री जोरावरमलजी महाराज

❀ राग . ❀

१—आज शहर मे म्हारा सत गुरुजी आया,
जब दीठा हरस सवाया रे लोय।
नेह करीने म्हैं निजरा दीठा,
आप लागा अमी-रस-मीठा रे लोय ॥आज०॥

२—दीप-दीप दीपे ज्यारी काया,
भविक-जीवा रे मन-भाया रे लोय।
सूरत आपरी मोहन - गारी,
आप छो बाल-ब्रह्मचारी रे लोय।

३—दया धरम री ये वाणी प्रकाशो,
आप मेटी मोहनी पासो रे लोय।
समकित रूप रतन मैं पायो,
नीठ-नीठ नर-भव मे आयो रे लोय ॥आज०॥

४—तेज - प्रताप दीसे अति रूडा,
आप ज्ञान निधि भरया पूरा रे लोय।
वाणी सिंह तणी परे गूजे,
पाखडी ऊभा ही धूजे रे लोय।

५—स्वामीजी 'बुधमलजी' मैं सतगुरु भेटिया,
छोड दीनी मोह ने माया रे लोय।
ज्या पुरुषा खने समकित पायो,
म्हारे कुमीजन राखी कायो रे लोय ॥आज०॥

६—'फकीरचन्दजी' गुणा रा स्वामी,
शिव - पुर रा गामीरे लोय।
चित्त चोरने थे चारित्तर लीनो,
थे उत्तम कारज कीनोरे लोय।

:: १ ::

१—द्राक्षे-क्षु-क्षीर-माक्षीक-मधुर-वचनो
[1]हृल्लसद्रत्न धार्यः
[2]संवार्योऽनार्य-कार्यः शम-दम-तपसा—
साश्रयोऽ ना[3]श्रयार्यः ॥
गाम्भीर्यो दार्य-धैर्याऽऽर्जव-प्रमुख-गुणै—
राश्रितः [4]संश्रिताऽर्यः ।
श्री जैनाचार्य-वर्योऽर्जित-जिन-महिमा
भाति [5]जोरावराऽऽर्यः ॥

सितुहर (विहार) जयनंदन

१—स्वस्थो हितैषी महनीय मूर्तिः,[6]
रम्यो मनीषी कमनीय-कान्तिः ।
गीतार्थ आनन्द-युतो महर्षिः
यमी दमी योऽभवदत्र भूमौ ॥

१—हृदि लसन्ति=शोभमानानि रत्नानि सम्यग् ज्ञानादीनि धार्याणि धारणीयानि यस्य सः ।

२—संवार्याणि=संबर द्वारा निरोद्धव्यानि, अनार्याणि=अप्रशस्तानि आश्रव-रूपाणि कार्याणि यस्य सः ॥

३—अनाश्रयैः-अशरणैः=आत्मोद्धारोपाय-हीनै रित्यर्थः, अर्यते= प्राप्यते स तथोक्तः, अशरण-शरण इत्यर्थः ।

४—अर्यैः क्षत्रियैः ओसवालादिभिः वैश्यैरग्रवाल-माहेश्वरीयादिभिश्च संश्रितः संश्रिता अर्या यमिति विग्रहः ।

५—पूज्य-जोरावराऽऽख्यो मुनिः भाति=प्रदीप्यते ॥

६—भावना स्तोत्र

२—तपो-धन सत्य परो मनस्वी,
आसीद्धन्या जिन - धर्म - सेवी ।
सुखोचित शुद्ध - विशाल-भाव
मदेन हीनो हत - सार - माय ॥

३—श्री शीलितो य परिपूर्ण-पुण्य,
युक्तोह्यनेक - श्रुत - सार - भावैं ।
ललाम-भूतो मुनि-वर्ग-मध्ये ॥
जीयान् स लोके गुरुदेव-'जोर' ॥

२—

५ सुकार्य - मात्र कृत मत्र येन,
राशि गुणाना भुवि यो बभूव ।
नाम्नाऽपि यस्याऽस्ति गुरो सुसिद्धि
कीर्ति विशाला हि कथ न तस्य ॥

३—

—धर्माधिकारिन् ! गुरुदेव ! शीघ्र,
रक्षा सदा मे कुरुताद् विपद्भि ।
महीन ! एतद्विदित जगत्या,
परार्थ - मात्मा खलु सन्मुनीनाम् ॥

४—

६—तल्लीनता मे भवतान्मुनीश,
नीतौ सुरीतौ च कुलीनताया ।
केलि मदीया जिन - सेवने हि,
सत्या सदा स्यात्तव देव ! योगात् ॥

७—रति विरक्तो कुरु मे मुनीन्द्र !
वाल्या दशा मे कुरुताद् विलीनाम् ।
ईर्ष्यादि - दोषै भवत प्रतापात्,
जीवोऽय मार्यो भवताद् विरक्त ॥

८—सार्थं निजं जीवन मत्र लोके,
नाथ ! त्वया निर्मित माप्य दीक्षाम् ।
गो-स्वामिनस्ते चरणेषु नित्यं,
रत्न-त्रयाधार ! सुवंदनं मे ॥

६—मार्गे त्वदीये परिमुच्य भोगान्,
रमन्त ईर्ष्या-विकला जना ये ।
वाग्मीश ! ते कर्म-रिपून् निहत्य,
रम्ये हि मोक्षे सुतरां वसन्ति ॥

—मधुकर मुनि

:: २ ::

❀ कवित्त ❀

१—जो रति-नायक जीति करे वश,
जो रन-संजम जोर लगावे ।
जो रत प्रीति जिनेश्वर के पद,
जो रत्न-त्रय यत्न करावे ॥
जो रमतो रह आतम-ज्ञान में,
जो रसना शिव-मार्ग बतावे ।
जो रत होय रटे प्रभु-जाप ही,
'जोर' मुनीश्वर सो कहलावे ॥

❀ छप्पय ❀

२—तज असार संसार,
सार संजम लखि लीनो ।
निज-जीवन करि धन्य,
किते जीवन-हित कीनो ॥

मार मोह - मद - मार,
वरस धन सचय कीनो ।
ज्ञान - विराग विचार,
सुधा - रस पावन पीनो ॥
नत अमरन रन तारन तिरन,
अमर-करन असरन सरन ।
चिर अमल चरित विचरत रहो,
जोरावर - जग - हित करन ॥

❀ कवित्त ❀

३—मोह-महीप पठाई चमू सजि,
काम-चमूपति को करि सागे ।
केते चलाय चूके कुसुमायुध,
या मुनि के अग एक न लागे ॥
ज्ञान-तपादि सो मारत देखि के,
मार चमूपति भीरु व्है भागे
मोह-महीप सो जोर कहो कर,
जोर चले नहीं जोर के आगे ॥
(जोर नहीं मुनि जोर के आगे)

कुचेरा— —स्व० अमृतलाल माथुर

❀ छप्पय ❀

४—जय गुरु जोर सुजान,
मही - मरजाद - सुमडन ।
जय गुरु जोर सुजान,
अखिल - अघ ओघ विहडन ॥

जय गुरु जोर सुजान,
दया को मग्ग दिखावन ।
जय गुरु जोर सुजान,
अघ केउ कीन्हे नहि पावन ॥

जय जोरावरमल्ल भान जिम,
दिल प्रश्न होय दरस दिय ।
वड पुन्न आज उदित भयो,
वचन-किरण हिय-तम हरिय ॥

सीहू— —स्व० हीरादान चारण

❀ कवित्त ❀

५—श्रेष्ठ-जन-वंश खांप, कला सर्व श्रेय स्वच्छ,
नगरी 'भूतेश' नाम जन्म लाभ लीनो ते ।
भयो 'रिद्धमल्ल' के सुधर्मी पुत्र, लयो भेप,
देश में विशेष कीरति परम पंथ चीनो ते ॥
विद्या-ज्ञान-दान-दाता, धर्म-ध्यान सांच धार,
जग वीच अलख लखि, काम पेश कीनो ते ।
मेट क्रम मंद ते आनन्द काल केऊ अब,
करी मुख-बन्द दुख-वन्द कर दीनो ते ॥

सीहू— —स्व० हरसुख चारण

:: २ ::

❀ राग:—ख्याल की ❀

गुरु-वर गुण-धारी
संजम - व्रत - धारी - तारी आतमा ॥ध्रुव०॥

१—'जोरावरमलजी' नाम आपका,
दुनिया में जस-धारी।
बाल-पणा में दीक्षा लेकर
भया बाल-ब्रह्म-चारी हो—॥गुरु०॥

२—मारवाड में 'सिहू' नाम का,
सुन्दर है इक गाम।
जन्म-भूमि है आप तणी वा,
मोहन-मदिर धाम हो—॥गुरु०॥

३—'ओस'-वंश में धन्य आपकी,
शुद्ध 'चोथरा' जात।
'रिद्धकरणजी' तात आपके,
'मगना' देवी मात हो—॥गुरु०॥

४—उगणीसे छत्तीस साल में,
शुभ ग्रह सुन्दर वार।
आखा तीज के दिवस आपने,
लिया भव्य अवतार हो—॥गुरु०॥

५—आठ वर्ष के हुवे आप जब,
ऊचा किया विचार।
मात-पुत्र की हुई भावना,
लेना सजम-भार हो—॥गुरु०॥

६—चम्मालिस की साल मनोहर,
आखा तीज दिन खास।
'नागौर' शहर में मात-पुत्र ने,
पूरी मन री आस हो—॥गुरु०॥

७—गुरु आपके 'फकीरचदजी',
मुनिवर बड़े विरागी।

शांत दांत चर्चा में सेंठा,
सत्य-धर्म-अनुरागी हो—॥गुरु०॥

८—संजम लेकर गुरुवर पासे,
सीखा ज्ञान अपार।
पंडित-राज कहाये गुरु-वर,
मारवाड़-सिणगार हो—॥गुरु०॥

६—वर्ष बयालिस संजम पाला,
कीना पर—उपगार।
जन-जन को उपदेश सुना कर,
किया खूब उद्धार हो ॥गुरु०॥

१०—साल छियासी जेठ मास की,
चोथ तिथि सुद जाण।
'भंवाल' गांव में अनशन करके,
कीना स्वर्ग-प्रयाण हो ॥गुरु०॥

११—ज्ञान-ध्यान सूं भरिया गुरुवर,
गुण-रतनां री खान।
शिष्य आपका बालक मैं तो,
कहां लग करूं बयान हो ॥गुरु०॥

१२—'मिसरी' मुनि की अरजी ऊपर,
रखजो गुरुवर ! ध्यान।
भव-भव का सब रोग मिटाके,
करजो मम कल्याण हो ॥गुरु०॥

❀ राग :—पपइया काहे मचावे सोर ❀

हमारे गुणवंता गुरु-राज (ध्रुव)

१—साम्य-भाव में निश दिन रमता,
त्याग दीनी सब माया ममता—
करता आतम - काज ॥हमारे०॥

२—पक्ष-पात का लेश न जिनमें,
क्षमा सरलता जिनके मन में—
भूषण साधु - समाज ॥हमारे०॥

३—गुरु - शरण में जो जन आवे,
जन्म - मरण से वो बच जावे
पावे अविचल - राज ॥हमारे०॥

४—सुख में दुख मे एक भावना,
रखते रंज न हर्ष-कामना—
जो हैं धर्म - जहाज ॥हमारे०॥

५—जीवन उन्नत प्रभु ! कर दीना
काम 'जोरावर' गुरुवर ! कीना—
तुम हो हम शिर - ताज ॥हमारे०॥

६—'मधुकर' शरण में सप्रति आया,
जन्म-जरा से अति घबराया—
करिये मेरा काज ॥हमारे०॥

❀ राग.—जय जगदीश हरे ❀

जोरावर स्वामी—
जय जोरावर स्वामी
जैन - धर्म के नामी—
गुरुवर - गुण - धामी ॥ टेर ॥

१—'रिद्धकरणजी' तात आपके—सबके सुख-दाता
स्वामी—सबके सुख-दाता
'ओसवाल' शुभ जात बोथरा, 'मगनाजी' माता ॥जोरा०॥

२—उन्नीसौ छत्तीस साल में—आखा तीज बड़ी
स्वामी—आखा तीज बड़ी।
जनम लिया था तुमने स्वामी, वरती हरस-घड़ी ॥जोरा०॥

३—उन्नीसौ की साल चमालिस—आखा तीज तिथी,
संयम लीना 'जयमल'-गण में, बनकर आप व्रती ॥जोरा०॥

४—श्रीयुत मान्य 'फकीरचन्द्रजी'—गुरुवर गुण-धारी,
स्वामी—गुरुवर गुण-धारी।
अंतेवासी तुम थे उनके ज्ञान लियो भारी ॥जोरा०॥

५—उन्नीसौ की साल छियांसी—जेठ मास आया,
स्वामी—जेठ मास आया।
अनशन करके शुक्ल चौथ को स्वर्गवास पाया ॥जोरा०॥

६—जनम 'सिहू' में धार 'नगीने'—मुनि-व्रत धार लिया,
स्वामी—मुनि-व्रत धार लिया।
तजकर देह 'भंवाल' आपने अपना काज किया ॥जोरा०॥

७—परम पूज्य गुरुदेव आप थे—अतिशय-धारी,
स्वामी—अतिशय-धारी।
मरु धरा में आप हुए हैं—ऊंचे अवतारी ॥जोरा०॥

८—तव चरण-कमल के 'मधुकर' बन—हम सरणे आयें,
स्वामी—हम सरणे आयें।
जीवन सफल बनाओ स्वामी! हम सब गुण गायें ॥जोरा०॥

—मधुकर मुनि

४

❀ राग —चन्दा प्रभु जग जीवन .... ❀

१—'जबू' द्वीप 'भरत' खड भारी,
ज्यामे गाम 'सिहू' है सुख कारी ।
जठे सुभट वसे वहु नर नारी ॥
अहो 'जोर' मुनि—
'दरशन' आवे लोग दूर से जस सुनी,
मुनि महिमा घणी
'फकीरचन्द' महाराज आपरे गुरु वणी ॥

२—जात बोथरा कुल - धारी,
जठे 'रिधकरणजी' साहुकारी ।
ज्यारे 'मगनाजी' नामे नारी,
अजी तसु नन्दन हुआ अवतारी ॥ अहो० ॥

३—माता सुत साभल वाणी,
ओ ससार अथिर जाणी ।
आङखो जिम अजली पाणी,
अजी वैराग हिरदे आणी ॥ अहो० ॥

४—वाल - पणे सजम लीनो,
धन दौलत सहू तज दीनो ।
पच महाव्रत शुद्ध लीनो—
अजी मुनि मुगत-महल सू मन कीनो॥अहो०॥

५—जिनवर आण अखण्ड पाले,
दोष बयालिस मुनि टाले ।
पाखडियां रा मद गाले,
अजी राग द्वेष दोय बीज बाले ॥ अहो० ॥

६—गुण सत्तावीस करने सोवे,
जिम मोतियों की माला पोवे।
जिम रजनी दीपक जोवे,
अजी दे उपदेश तुरन्त सोवे ॥ अहो० ॥

७—मुनिराज पंडित भारी,
सूत्र अर्थ टीका सारी—
वांचण री तो छिब न्यारी—
अजी वाणी लागे हद प्यारी ॥ अहो० ॥

८—कलि-काल पंचम आरे,
करम-रज मुनिवर झाड़े,
आतम ना कारज सारे—
अजी भव-जीवां ने मुनि तारे ॥ अहो० ॥

९—उगणीसे पचपन आया,
'हरसाला' में सुख पाया।
भादरवा में गुण गाया—
अजी 'हरखचन्द' हिये हरसाया ॥ अहो० ॥

हरसोलावः— —स्व० हरखचन्द

:: ५ ::

❀ राग : .... ❀

१—अनंत सिद्धां सूं वीनतीस रे,
गुरु-गम लागूं पाय।
सरसत माता वीनवूंसरे,
गणपत लागूं पाय हो—
गुरुदेव हमारा, 'जोरावर' मुनिवर जग में दीपता ॥

२—'रिद्धकरणजी' पिता आपके,
धन्य 'मगना' बाई मात ।
गाव 'सिहू' मे खाप बोथरा,
भली दीपाई जात हो—॥गुरु०॥

३—पाच महाव्रत सुधा पाले,
मारग भाखे साचो ।
सबसे मैत्री भाव आपका,
प्रेम धरी ने जाचो हो ॥गुरु०॥

४—उगणीसे छत्तीस मे सरे
जनम लियो सुख दाय ।
चमालिस मे दीक्षा लीनीसरे
भेटया 'फकीरचद' महाराय हो ॥गुरु०॥

५—विधि सेती व्याख्यान फुरमावो,
वाणी अमृत - धारा ।
सम दम माही रमता गुरुवर
पाप - लेप से न्यारा हो ॥गुरु०॥

६—शहर कुचेरा अडसठ साले,
चातुरमास के आया ।
धर्म ध्यान और त्याग वरत मे,
नर-नारी दिल-चाया हो ॥गुरु०॥

७—हाथ जोडने करू वीनती,
'मानमल्ल' श्रीमाल ।
आसोज सुदी विजया दशमी दिन,
वरते मगल - माल हो ॥गुरु०॥

कुचेरा —स्व० मानमल

:: ६ ::

❀ राग:—माढ ❀

मुनि मारग - गामी
सिव-कामी
जोरावर--स्वामीजी ।। ध्रुव० ।।

१—मूरत थांरी - मंगल - कारी
महिमा - धारी - जोय !
स्रावक - गण हरसे सहू
ज्यूं कुमुद शशंक विलोय ।।मुनि०।।

२—धर्म निशानी, आनंद-खानी,
जिन - वाणी - शुभ गंध ।
तव मुख-कज प्रगटी गहेजी,—
स्रोता - गण मकरंद ।।मुनि०।।

३—पाहन ने पादव करोजी,
पशु ने पुरुष सुटेव ।
लोह थकी कंचन - समोजी
ऐसा तुम गुरु - देव ।।मुनि०।।

४—मुनि गुण-गण-गण रा धणीजी,
वरणे पवयण गाय ।
किम भणिये थोड़ी मतीजी,
निधि-जल सीप न माय ।।मुनि०।।

५—संवत बहोत्तर शत उगणीसे,
'कुचेरे' कियो चौमास ।
'अमृत' पर किरपा करोजी,
परमानंद - प्रकाश ।।मुनि०।।

❀ कवित्त ❀

१—ज्ञान हुपे अविचार छयो,
छुपि बैठो है शील सुथान छिनाके।
साच हुके उर आच लगी,
मुनिराज भये उडुराज विनाके।

शोक भयो नर-लोकहि मे,
सुर लोक सुखी असनाथ जिनाके,
जोग-विराग-दया-तप भार हु,
'जोर' विना सब जोर विना के॥

सवैया

२—क्रोध मान माया लोभ, मान मे न मावत है,
क्षमा मृदु आर्जव सतोष दीन हो रहे।
अज्ञताई मोह-दम्भ दुर्मति को राज भयो,
ज्ञान औ विराग तप भाव तेज खो रहे।

परम हुलास भयो, राग-द्वेष आदिन को,
साच शील सजम अहिंसा आदि रो रहे,
'जोर' के गये ते आज एते तो सजोर भये,
जोर के गये एते पूरे कमजोर है॥

३—सुनत निरोग हम जानी ही दरस करि,
शीष को नमावेंगे यो रहे शीश धूनते।
हाय ये अचानक ही ऐसे का अभाग आये,
हिय को हरस गयो रहे गुन-गुनते।

हा हा प्रभु 'जोर' जिय जानो ढोर-ढोर तोपे,
एक दम छोर दीने कोन अवगुन ते।

सारी तुम करुना विसारी हम दीनन की,
सुनी ना 'हजारी' की हमारी कब सुनते।

कुचेरा : —स्व० अमृतलाल माथुर

:: ७ ::

सवैया

४—धूजी धरा-धाम अरु केते ही पहार परे,
बड़े-बड़े वृक्ष गिरे पता नहीं पात है।
कूकी-कूकी केकी-केते शब्द कललाट करे,
गगन-अंधेरा-भए देख भय आत है।

भान भी अतेज भये किरण-प्रकाश नाह,
ऐसे विपरीत चिन्ह चित्त ना समात है।
टूटी-टूटी तारे-गण जग में उजारे देत,
'जोर' विन जैन-धर्म-धजा थहरात है।

सिहू : —कृपाराम चारण

स्वामीजी
श्री हजारीमलजी
महाराज

जन्म.— वि० स० १६४३ माह सुद ५ डासरिया (टाडगढ)

दीक्षा — वि० स० १६५४ जेठ वद १० नागौर (मारवाड)

स्वर्गवास —वि० स० २०१८ चैत वद १० नोखा (मेडता)

यद् ज्ञान सुनिवघ-सिन्धु तरणे, नौका निभ वर्तते,
यद्वाणी शुभ मानसाम्बुज - रविर्नानार्थं - सवोधिनी ।
यत्कीर्ति. किल दिक्षु विस्तृत-नरा चन्द्रोज्ज्वला सर्वदा;
वदे तं च 'हजारिमल्ल' मुनिप ससार वार्धौ तरीम् ॥

नागौर :

—माधव शास्त्री

:: १ ::

❀ सवैया ❀

१—जांकी सत्य-सेवा गुरु-देव मन-मानी सदा
परम विनीतता की कीरत विधारी है।
कोयल-सुभाव में कुभाव को अभाव सदा
दरस किये ते होत आनंद अपारी है।
पढ़े श्रुत-पाठ आठ याम रत संजम में,
काटे कर्म-काठ धीर धर्म-धुर धारी है।
'जोर' मुनि-शिष्य जोरदार जग-जोतिवंत,
संत हितवंतन में सोहत 'हजारी' है।

❀ सोरठा ❀

२—कृपा - साधु को ठाम, श्री 'जोरावर' देव को।
नमो 'हजारी' नाम, जिम गौतम श्री वीर को।
३—विमल-बोध 'ब्रजराज' तथा स्वामि के शिष्य लघु,*
अति आनंद समाज, नमो सकल मुनि-मंडली।

❀ दोहा ❀

४—श्री जोरावर - शिष्य सब जय - युत रहे जहान।
संजम - रत विद्या - निपुन, पंडित परम सुजान॥

कुचेरा : —स्व० अमृतलाल माथुर

:: २ ::

❀ सवैया ❀

मोह मुनि मारे, तारे जगत में अनेकों जीव,
दया - उपदेश देत अमी बरसावे है।

*मधुकर मुनि

देश ओ विदेश माहि सकल सराहे जन।
पाप को हटावे दूर ज्ञान-रस पावे है।
तेज तपधारी अरु बाल ब्रह्मचारी आप।
दरस मात्र ही से सभी पाप हठ जावे है।
दूर - दूर देश हुसो आवे नर-नार सब
एक ना हजारों 'हजारी' गुण गावे है।

सिहू —कृपाराम चारण

३

❀ राग —जय जगदीश हरे ❀

जय जय गुरु देवा, ओं जय जय गुरु देवा
भक्ति भाव से स्मरण करता, पावे नित मेवा ॥ओं जय०॥

१—नाम 'हजारीमलजी' स्वामी, सब को सुखकारी। स्वामी०।
'मोतिलालजी' तात आपके, जग मे जसधारी ॥ओं जय०॥

२—मात आपकी 'नदूबाई', रतन कूख वाली। स्वामी०।
'डासरिया' है ग्राम आपका, जान सुणोयत म्हाली ॥ओं जय०॥

३—विक्रम सवत उगणीसो मे, साल तयालिसरी। स्वामी०।
जन्म दिवस है माघ मासरी, पाचम सुद सखरी ॥ओं जय०॥

४—उगणीसों में वर्ष चोपने, ज्येष्ठ मास प्यारा। स्वामी०।
नगर 'नगीने' पावन सयम, वद दशमी धारा ॥ओं जय०॥

५—परम पुज्य गुरुदेव 'जोर' के, शिष्य रतन भारी।। स्वामी०।
विनय भाव से सीखे उनसे, आगम अवतारी ॥ओं जय०॥

६—श्रमण-सघ मे मारवाड का, मत्री पद पाया। स्वामी०।
धन्य आपने सफल बनाई, निज जीवन-काया ॥ओं जय०॥

३—भर नैना अर्ज गुजारूं मैं,
गुरुदेव 'हजारी' पुकारूं मैं,
परदा तेरे मेरे बीच का बदकार बदले।
फिर क्या डर है जो सारा संसार बदले।

४—'व्रज' 'मधुकर' शिष्य कहाए हैं,
सब सद्गुण जिनमें समाए हैं।
'उमराव' अमर पथ ना बदले।
फिर क्या डर है जो सारा संसार बदले।

❀ राग :—तेरे कुचे में अरमानों की दुनिया लेके आया हूँ ❀

जमाना याद करता है, करेगा भी सदा तुम को ॥टेर॥

१—काट कर पाश माया का, सत्य-पथ पर चले थे तुम,
अतुल वैभव चरणों में त्याग संयम में ढ़ले थे तुम।
सरलता सौम्यता की खान सा, विधि ने रचा तुमको,
जमाना याद करता है करेगा भी सदा तुमको।

२—आयु के आखिरी क्षण तक महाव्रत में रहे थे तुम,
तपस्या त्याग आत्मिक चिंतना में नित बहे थे तुम,
अनेकों आपदाओं ने बनाया, दृढव्रती तुम को,
जमाना याद करता है करेगा भी सदा तुम को।

३—नयन के नीर की श्रद्धाञ्जली ये प्राण देते हैं,
तुम्हें ओ देव! हम इतना सरल उपहार देते हैं,
तुम्हारे स्नेह का ऋण क्या चुका सकते,कभी तुमको।
जमाना याद करता है करेगा भी सदा तुम को।

४—लिया था स्वय सथारा व नश्वर देह परिहारी,
स्वर्ग के ओ पथिक ! तुम धन्य हो तुम धन्य गुरु 'हजारी'
'उमराव' जग मे आपका आधार है हमको,
जमाना याद करता है करेगा भी सदा तुम को।

—जैन साध्वी उमराव कुंवर

६

❀ राग —जब तुम्ही चले परदेश ❀

परम श्रद्धेय गुरुराज, श्री हजारीमलजी महाराज,
स्वर्ग सिधार, थे भवि जन-तारण हारे ॥

१—लिया जन्म डामरिया माही,
'मोतीलालजी' पिता सुख दाई।
माता 'नदू' बाई के तुम थे प्राण पियारे ॥टे०॥

२—गुरुवर आपके गुणधारी,
'जोरावरमलजी' पडित प्रियकारी।
बालक वय मे आप दीक्षा धारे ॥टे०॥

३—बुद्धि के आप सागर थे,
गुणों के गुरुवर आगर थे,
हर्ष-मुदित रहते थे नयन तुम्हारे ॥टे०॥

४—ममता को दूर हटाई थी,
समता को दिल मे जमाई थी
काम क्रोधादि विषयों को दूर निवारे ॥टे०॥

५—ज्ञान-ध्यान मे चित्त लगाया था
गुरु-सेवा मे तन झुकाया था,
नहीं था आलस्य गुरुवर अग तुम्हारे ॥टे०॥

१—तूं ज्ञान का गुरुवर सागर, लावे जो गोते आकर,
हो जावे वे कृतार्थ, समाधान तेरे से पाकर,
तारण हारा तूं, पतित जनों के जीवन का है सहारा तूं ॥जैन०॥

२—नहीं पास मेरे है बुद्धि, जो गुणानुवाद मैं करलूं,
तेरे तप जप सम दम खमकी, तस्वीर बना कर धरलूं,
जग उजियारा तूं, भटके हुओं को राह दिखावन हारा तूं ॥जैन०॥

३—रत्नाकर कहुँ या सुधाकर, पद्माकर कहूँ या दिवाकर,
अवतार लिया तूं धरा पर या तुझ को कहूँ निशाकर,
जग का प्यारा तूं, कैसे उपमा दूं है जग से न्यारा तूं ॥जैन०॥

४—आंखों से तेज झलकता, चेहरे पर नूर बरसता,
उमराव दरस जो करले, उम्मेद नहीं मन भरता,
जादू हारा तूं 'कंचन' सेवावन्ती की नैया को खेवन हारा तूं,
॥जैन०॥

—जैन साध्वी कंचन कुंवर
—जैन साध्वी सेवावंती

:: ६ ::

❀ राग:—सुगुणां साधुजी हो मुनिवर मन चल्यो तूं घेर ❀

सुगुणां साधुजी हो मुनिवर वंदूं वारंवार ॥ध्रुव०॥

१—शासन-पति वर्द्धमान की हो श्रोता—
जग में जय-जय-कार ।
ज्यांरो संघ दिपावती हो श्रोता—
'हजारीमल्लजी' अणगार ॥सुगुणा०॥

२—जबू - द्वीप के क्षेत्र में हो श्रोता—
भरत - खड - मझार ।
प्रात 'मेरवाडा' भलो हो श्रोता—
'डासरिया' गुलजार ॥सुगुणा०॥

३—पिता श्री 'मोतीलालजी' हो श्रोता—
'नदूजी' रा नद ।
अज्ञान तिमिर ने मेटवा हो श्रोता—
प्रगटया पूनम - चद ॥सुगुणा०॥

४—'जयमलजी' की सप्रदाय मे हो श्रोता—
जैन - जगत - श्रियकार ।
मुनि 'जोरावरमलजी' हो श्रोता—
गुरु मिल्या गुणधार ॥सुगुणा०॥

५—उन्नीसो चम्मालिसे हो श्रोता—
लीनो नर - अवतार ।
साल चोपने जग तज्यो हो श्रोता—
लेकर सयम - भार ॥सुगुणा०॥

६—क्रिया पाली निर्मली हो श्रोता—
सूत्र कियो उपगार ।
ज्योति जगाई धर्म की हो श्रोता—
ज्ञान - तणा भडार ॥सुगुणा०॥

७—दो हजार दश साल मे हो श्रोता—
'अजय' शहर सुखकार ।
चोमासो कियो ठाठ से हो श्रोता—
वरत्या मगला चार ॥सुगुणा०॥

८—शांति संप और प्रेम की हो श्रोता—
वरसी अमृत - धार।
'जीत' दिपायो धर्म ने हो श्रोता—
वरत्या जय - जयकार ॥सुगुण०॥

अजमेर : जीतमल चोपड़ा

:: १० ::

❀ राग:—दिल लूटने वाले ❀

जय बोलो 'हजारी' मुनिवर की, सब हिल मिल करके नर-नारी।
पा इनके दर्शन छाई आज मन में सबके खुशियां भारी॥
१—है 'मोतीलालजी' तात तेरे, और 'नंदू' बाई माता है –२–
उन्नीसो तंयालिस साल, डांसरियां गांव के अवतारी
२—लख झूठा नेहा इस जग का, वैराग्य चला था मन में –२–
उन्नीसो चोपन संबत में गुरु आपने ये दीक्षा धारी ॥जय०॥
३—तब जीतन खातिर काय क्रोध
और दूर भगाने मोह मद को –२–
चारों कषायें मारन को-गुरु करते हो तुम तप भारी ॥जय०॥
४—थी बहुत दिवस से आश यही
पा धन्य बने हम तव दर्शन –२–
दे दर्शन आपने पूर्ण करी-इम सब जनकी आशा सारी ॥जय०
५—जय अनुपम ज्ञानी श्री गुरुवर!
जय अद्भुत त्यागी श्री मुनिवर –२–
कैसे तव महिमा गायें आज, हम सब हैं अल्प बुद्धिधारी॥जय०॥
६—अब यही अरज है हम सबकी
दो नित दर्शन श्री गुरुवर –२–
'प्यासा' डेह का सब समाज, अरजी चरणों में है प्यारी ॥जय०॥

डेह (मारवाड़) —संपत 'प्यासा'

११

❀ राग—मुबारिक हो ❀

सदा गुरुदेव के दर्शन मुबारिक हो, मुबारिक हो
सुणो जिन-वेण हो परसन—मुबारिक हो, मुबारिक हो ॥

१—'हजारीमलजी' स्वामी का चोमासा शहर 'जोधाणे'
छाया आनद घर-घर मे—मुबा०

२—छटा व्याख्यान की देखो, खिली केसर की क्यारी है
लगी है धर्म - फुलवारी—मुबा०

३—मुनि 'ब्रजलालजी' स्वामी, सुनाते सार सास्तर का-
मिटाते भर्म सब दिल का—मुबा०

४—'मिसरीमलजी' मुनि पंडित, सूत्र टीका के है ज्ञाता
पिलाते प्रेम का प्याला—मुबा०

५—'मागीलालजी' मुनिवर, वृद्ध साधु विवेकी है
क्षमा - सागर मधुर वाणी—मुबा०

६—भोले भाले मोहन मुनिवर देश मेवाड भूमि के
ज्ञान वैराग्य - रग - भीना—मुबा०

७—हंस तो हर्ष घर आया, हुवे दिदार मुनिवर के
हिरदे का कमल विकसाया—मुबा०

जोधपुर —स्व० हसराज करणावट

१२

❀ राग—आओ-आओ ए मेरे योगी ❀

गाओ गाओ अये मेरे मित्रों ! आज गुरु गुण गाना रे

१—ज्ञानी ध्यानी महातपस्वी, गुण-रत्नों की खान
शात दात और करुणा-सागर कहा तक करे बयान ॥गाओ०।

२—गुरु 'हजारीमलजी' स्वामी, प्रेम-सुधा के धाम।
सेवा-भावी 'व्रज' मुनीश्वर जागृत आठों याम ॥गाओ०॥

३—'मिश्री' मुनि है 'मधुकर' सच्चे, शिक्षा के दातार।
भिन-भिन करके ज्ञान-भानु से, जग को करते पार ॥गाओ०॥

४—'कुचेरा' संघ सकल है, पुण्यवान गुणवान।
संतों की सेवा में अर्पण, करता-तन-धन-प्राण ॥गाओ०॥

५—वीर ज्ञानी और भक्त बनाओ, हो जग के हितकारी।
जैन जगत 'जसवंत' बनाओ अर्जी दास गुजारी ॥गाओ०॥

❀ राग:—म्हारी आंखडल्यां रो तारो दुलारो ❀

म्हारा गुरु-वर प्यारा—
धर्म-दुलारा-नमन करूं हर वार ॥टेर॥

१—अमावस में पूर्णिमा रे, कर दिखलाई आप।
शांत दांत गुरु ज्ञान के सागर, रटते नित जिन-जाप हो ॥म्हारा०

२—गुरु 'हजारीमलजी' स्वामी गुण-रतनां री खान।
'व्रजलालजी' सेवा-भावी, पंडित 'मिश्री' जान हो ॥म्हारा०॥

३—भाग्य यहां के हैं भारी, चातुर्मास सुखकार।
आप पधारे कृपा करके, वारि जाऊं बार हजार हो ॥म्हारा०॥

४—तपस्या के तो ठाट लगे हैं, कुदरत भी अनुकूल।
हर्षित है सब देश दिसावर दुःख गये सब भूल हो ॥म्हारा०॥

५—पर लख हालत गिरती अपनी अश्रु बहे गुरुराय।
सतियां संत घटे हैं दिन-दिन, पंडित आदर नाय हो ॥म्हारा०

६—गति-विधि रही गर ऐसी ही तो, अस्तित्व खतरा मांय।
ज्ञानी ने है दुःख घणे रो-मूरख समझे नाय हो ॥म्हारा०॥

७—हिल-मिल करके संघ सकल ही, यतन करें भरपूर।
पनपे फिरसे गिरती हालत, चढ तो रहसी नूर हो ॥म्हारा०॥

८—तन-धन-जन से सघ यहा का, सेवा कर हर्षाया।
'जसवत' भाग्य सराहे अपना, सहजानद समाया हो ॥म्हारा०॥

❀ राग —नगरी नगरी ❀

आओ मित्रों! सव मिल आओ, दर्शन कर हर्षाये रे
स्वामीजी की मोहिनी मूरत हृदय निरतर ध्याये रे ॥टेर॥

१—ज्ञानी ध्यानी महातपस्वी, शात-दात गुण-खान है –२–
वाणी से अमृत की वर्षा होती है नित जान रे–२–
वाल ब्रह्मचारी स्वामीजी-सेवा कर सुख पाये रे ॥आओ०॥

२—स्वामीजी श्री हजारीमलजी दीपे जग में भान है–२–
अतुल गुणों के धारक गुरुवर, कहा तक करें वयान रे–२–
दिव्य भाल का तेज मनोहर कर दर्शन हरसाये रे ॥आओ०॥

३—'ब्रजलालजी' जागृत रहते, नित ही आठों याम रे–२–
आज्ञा और पठन पाठन 'कुचेरा' पुण्य धाम रे–२–
सेवा का ले लाभ सघ सव 'जसवत' भाग्य सराहये रे ॥आओ०॥

४—पडितवर है मिश्री 'मधुकर' रहस्य सूत्र जाने रे–२–
गहरी टीका गूढ अर्थ का साफ-साफ व्याख्यान रे–२–
सुनकर भविजन जन्म सफल हो नित प्रति दिन गुण गाय रे
॥आओ०॥

❀ राग —चुप चुप आते हो ❀

स्वामी श्री श्री 'हजारीमलजी' वडे गुणवान है।
वयो वृद्ध तपस्वी भी महा-पुण्यवान है जी॥
महा-पुण्यवान हैं ॥टेर॥

१—गाव 'डासरिया' माही आप - जन्म - स्थान है।
हर्ष मनावे सभी गावे मगल-गान है जी गावे॥
खुशिया सर्वत्र फैली कुदरत गावे गान है ॥महा०॥

२—पिता 'मोतीलालजी' को अधिक सुहाये थे।
माता 'नंदू बाई' के भी मन खूब भाये थे जी खूब ॥
संसार को छोड़ करके मुनि बने महान हैं ॥महा०॥

३—ज्ञान - ध्यान - तपस्या में लगा पूरा जोर है।
शांत दांत क्षमा-शील बने शिर-मोर हैं जी बने ॥
संयम-गुणों का किया पूरा सुधा - पान है ॥महा०॥

४—मुनि 'ब्रजलालजी' भी गुणों के भंडारी हैं।
पंडित मुनि 'मधुकरजी' देते शिक्षा भारी हैं जी देते ॥
जैन - समाज में तो 'जसवत' महान हैं ॥महा०॥

५—कुचेरा का अहोभाग्य चौमासा फरमाया है ॥
इकसठ की साल यहां पे संघ मोद पाया है जी संघ ॥
जाते जहां भी आप करते धर्म का उत्थान है ॥महा०॥

❀ राग:—दिल लूटने वाले ❀

चौरासी में भटका-अटका अब तेरी शरण में आया हूँ।
शांति अभी तक ना पाई है-मैं व्यथा सुनाने आया हूँ ॥टेर॥

१—भोगों में भटका रात-दिवस व्यसनों में व्यस्त रहा स्वामिन।
तृष्णा की तांत न तोड़ सका—पाखंडी बन हर्पाया हूँ ॥चौरासी॥

२—काम-क्रोध-मोह में अंधा बन—कामांध बना मैं अज्ञानी।
निंदा विकथा करके चित ही पामर बनकर पछताया हूँ ॥चौरासी॥

३—दश बोलों का शुभ योग मिला, अब दया दृष्टि ऐसी कीजे।
गुरु आप 'हजारीमल' स्वामी--मैं चरण-शरण में आया हूँ
॥चौरासी॥

कुचेरा :

—जसवंतराज खींवसरा

१४

१—लगे चोट पे चोट कहो कैसे सभाले,
हाय ! हरामी हत ! क्रूर दृष्टि से न्हाले।
ले गयो सब-अनीश गणाधिप को गटकायो,
तदपि दया विहीन खावतो नहीं अघायो।
मारवाड मत्री मुनि हाय ! हजारी ले गयो,
श्री जय-गच्छ उनके बिना आज अलूनो हो गयो।

२—नोखा मे तज नेह, देह नश्वर को रख कर,
कीनो स्वर्ग प्रयाण, अचानक कानों आकर,
दीनी खोटी खबर, शबर हृदय नहीं धरता,
साथी गया विलाप, मोद अब किस पर करता।
कौन दशा इस सघ की, होगी हे भगवान !
दिन - दिन हमसे जा रहे ऐसे सत महान्,

—मरुधर केसरी मत्री मिश्रीमलजी म०